हरिभूमि
रेवाड़ी भूमि
रोहतक, रविवार 26 अप्रैल 2026

तापमान
अधिकतम 43 .0 डिग्री
न्यूनतम 24 .5 डिग्री

11 पुलिस टीम ने विद्यार्थियों को नशे से दूर रहने की दिलाई शपथ

12 ग्रीष्मकालीन अवकाश में यात्रियों को मिलेगी सुविधा एक मई से जून तक बढ़ाए कोच

ब्रास मार्केट के वीर सारवरकर पार्क का एक माह से बंद पड़ा कार्य

किस्तों में चल रहा पार्कों का जीर्णोद्धार झूले टूटे व अधूरी पड़ी चारदीवारी

■ सेक्टरों की पार्कों पर ध्यान नहीं दे रहा विभाग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

हरिभूमि सरोकार

जिले में शहरी निकाय चुनाव का असर विकास कार्यों पर भी पड़ रहा है। शहर के कई पार्कों में करोड़ों रुपये से सुधार व सौन्दर्यकरण का कार्य किया जा रहा है, लेकिन चुनाव के कारण ये कार्य मंद पड़ गया है और कई पार्कों में तो कार्य एक महीने से अधूरा पड़ा हुआ है। शहर के नेहरू पार्क, ब्रास मार्केट वीर सारवरकर पार्क, ब्रास मार्केट तिकोना पार्क सहित सेक्टरों के पार्क बदहाल स्थिति में है। पार्कों की चारदीवारी जर्जर अवस्था में आ चुकी है। पार्क के मुख्यद्वार की हालय दयनीय हो चुकी है, वहीं नेहरू पार्क में लंबे समय से ओवरफ्लो हो रहे सीवर की समस्या का समाधान नहीं हो रहा है। चारदीवारी टूटी होने से पार्कों के अंदर पूरे दिन गोवंश का जमावड़ा लगा रहता है। सेक्टरों के पार्कों की दशा सुधारने की ओर भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है। पार्कों के झूले व ओपन जिम मशीनें टूटने के साथ घास भी गायब होने से जमीन दिखने लगी है।

रेवाड़ी। सेक्टर-3 के पार्क की टूटी पड़ी चारदीवारी। फोटो : हरिभूमि

पार्क के झूलों का सुधार नहीं किया गया

ब्रास मार्केट के वीर सावरकर पार्क का एक महीने से जीर्णोद्धार कार्य बंद पड़ा हुआ है। पार्क में लोगों के बैठने के लिए शेड बनाई गई है। इसके अलावा पैदल पथ का कार्य अधूरा पड़ा हुआ है। पार्क की चारदीवारी भी अधूरी बनाकर छोड़ दी गई है, जिससे पार्क के अंदर गोवंश का जमावड़ा लगा रहता है। वहीं ब्रास मार्केट के तिकोना पार्क की लंबे समय से चारदीवारी बनाकर छोड़ दी गई है, जबकि पार्क के अंदर गंदगी के ढेर लगे हुए है। पार्क के झूलों का भी अभी तक सुधार नहीं किया गया है।

सेक्टरों के पार्क खस्ताहाल

शहर के सेक्टर-1, सेक्टर-3 व सेक्टर-4 के पार्कों में लगी ओपन जिम मशीनें व झूले पूरी तरह खस्ताहाल स्थित में आ चुके है। नगर परिषद की ओर से पार्को की व्यवस्था पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया जा रहा है। सेक्टर के पार्कों की चारदीवारी भी जर्जर हालत में आ चुकी है। काफी पार्कों की चारदीवारी व ग्रिल टूट कर गिर चुकी है।

सीवर ओवरफ्लो का नहीं हो रहा समाधान

शहर के मुख्य नेहरू पार्क में लंबे समय से सीवर ओवरफ्लो की समस्या बनी हुई है, लेकिन नगर परिषद की ओर से समस्या का समाधान नहीं किया जा रहा है। सीवर के गंदे पानी से पार्क में दुर्गंध फैल रही है, जिससे पार्क में बैठना दुश्वार हो रहा है, वहीं पार्क के पास से गुजरने पर भी लोगों को बदबू का सामना करना पड़ रहा है। सीवर का गंदा पानी के जमा होने के कारण पार्क में लगी घास व पौधे भी खत्म हो गए है।

रेवाड़ी। ब्रास मार्केट के वीर सावरकर पार्क का अटका पड़ा कार्य।

रेवाड़ी। ब्रास मार्केट के तिकोना पार्क में ऊगी खरपतवार व जमा गंदगी।

खबर संक्षेप

गोठड़ा अहीर में प्रशासन का रात्रि ठहराव कार्यक्रम कल

रेवाड़ी। जिला प्रशासन की ओर से 27 अप्रैल को गांव गोठड़ा अहीर में रात्रि ठहराव कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। सीटीएम जितेंद्र कुमार ने बताया कि डीसी अभिषेक मीणा व एसपी हेमेंद्र कुमार मीणा रात्रि ठहराव के दौरान ग्रामीणों से सीधा संवाद करेंगे। कार्यक्रम के दौरान सार्वजनिक व व्यक्तिगत समस्याओं को सुनकर उनका समाधान किया जाएगा। इस मौके पर अनेक विभागों के अधिकारी भी मौजूद रहेंगे।

गोवंश के सम्मान में गोरक्षा दल की शोभायात्रा कल

कोसली। नाहड़ ब्लॉक गोरक्षा दल की ओर से गो-सम्मान आह्वान अभियान के अंतर्गत कोसली में शोभायात्रा का आयोजन किया जाएगा। यह यात्रा 27 अप्रैल को सुबह भाकली मोड़ से प्रारंभ होकर श्री श्याम चौक होते हुए कोसली तहसील तक पहुंचेगी। गोरक्षा दल से विजय यादव ने बताया कि शोभायात्रा का उद्देश्य समाज में गोमाता के प्रति सम्मान और संरक्षण की भावना को जागृत करना है।

सीटीएम नोडल अधिकारी नियुक्त

रेवाड़ी। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं डीसी अभिषेक मीणा ने बताया कि नगर परिषद रेवाड़ी और नगर पालिका धारूहेड़ा के चुनाव संबंधी शिकायत लघु सचिवालय स्थित एसडीएम रेवाड़ी के कार्यालय के कमरा नंबर-122 में दे सकते हैं। उन्होंने बताया कि राज्य निर्वाचन आयोग हरियाणा के आदेशानुसार चुनाव संबंधी शिकायतों के लिए सीटीएम जितेंद्र कुमार को नोडल अधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया है।

ग्रामीणों ने समस्याओं को लेकर विधायक को सौंपा मांगपत्र

■ विधायक ने अधिकारियों को ग्रामीणों की समस्या के समाधान के निर्देश दिए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कोसली

कोसली गांव के ग्रामीणों ने विधायक अनिल यादव को मांग पत्र देकर गुड़ियानी रोड स्थित रामबाग में टाईल्स बिछवाने, टाईल्स का रोड बनवाने तथा गांव में सामुदायिक भवन के निर्माण की मांग की है। ग्रामीणों ने गांव के हरदेवा जोहड़ के गंदे पानी की निकासी के लिए पंपसेट लगवाने व पाइप लाइन बिछवाने की भी मांग की है। गांव के पंच अनिल, राजेंद्र, ओमप्रकाश, दीपक, जयभगवान व रामसिंह ने बताया कि बरसात के दिनों में जोहड़ का पानी ओवरफ्लो होकर घरों में घुस जाता है, जिसके कारण ग्रामीणों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। विधायक अनिल कुमार ने अधिकारियों को ग्रामीणों की समस्या के समाधान के निर्देश दिए हैं।

रेवाड़ी। कोसली विधायक अनिल कुमार को मांग पत्र देते ग्रामीण। फोटो : हरिभूमि

जेएलएन नहर में नहा रहे किशोर की डूबने से मौत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कोसली

■ मौके पर पहुंची फायरब्रिगेड की टीम ने नहर में किशोर की तलाश शुरू की

■ नहर में काफी दूर तक खोजबीन के बाद किशोर के शव को नहर से निकाला

क्षेत्र के बहू गांव में मामा के यहां आए हुए एक किशोर की नाहड़ गांव के पास जेएलएन नहर में नहाते समय डूबने से मौत हो गई। 15 वर्षीय किशोर पांडू शुक्रवार को अपने मामा व उनके साथियों के साथ नहर में नहाने आया था तथा पेड़ की टहनी से रस्सी बांधकर नहर में नहा रहा था। तभी अचानक रस्सी टूटने से वह पानी के बहाव के साथ बह गया। किशोर के मामा व उनके साथियों ने उसे बचाने का प्रयास किया। शोर मचाने पर आस पास के लोग भी आ गए, लेकिन तब तक किशोर काफी दूर जा चुका था। सूचना के बाद नाहड़ पुलिस मौके पर पहुंची तथा एनडीआरएफ व गोताखोर टीम को बुलाया गया। मौके पर पहुंची फायरब्रिगेड की टीम ने नहर में किशोर की तलाश शुरू की, लेकिन देर सायं तक सफलता नहीं मिली। शनिवार प्रातः एनडीआरएफ व गोताखोर टीम ने प्रयास शुरू किया तथा नहर में काफी दूर तक खोजबीन के बाद किशोर के शव को नहर से निकाला। मौके पर पहुंचे हिसार जिले के सिंहघणा गांव निवासी किशोर के दादा आईदान ने पुलिस को दिए ब्यान में कहा कि उनका पोता पांडू अपने मामा आकू, उसके साथी लाल सिंह व मुकेश के साथ नहर में नहा रहा था।

उनका पोता पेड़ की टहनी से एक रस्सी बांधकर नहर में नहा रहा था कि अचानक रस्सी टूटने से वह नहर में बह गया।

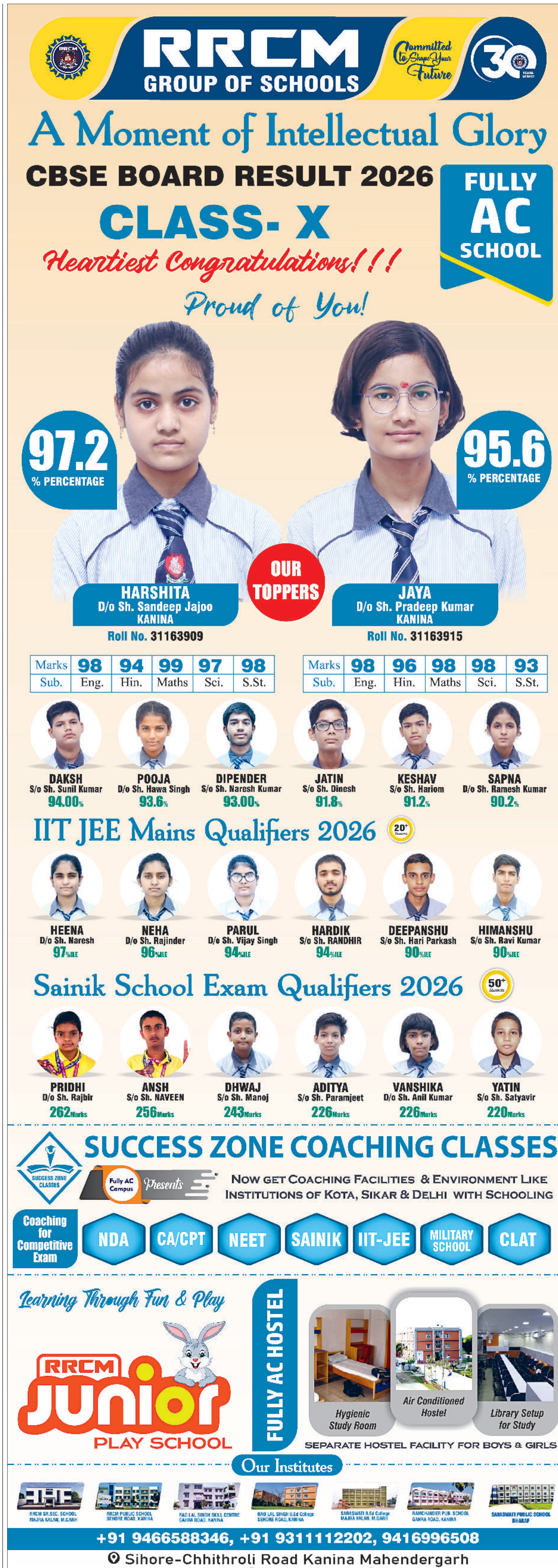

सोना-चांदी या मल्टी-एसेट फंड? निवेश से पहले जानें पूरा गणित

- उच्च रिटर्न के लालच में न करें गलती, जोखिम और रिटर्न का संतुलन ही समझदारी
- बाजार की चाल, जोखिम और लक्ष्य के हिसाब से चुनें सही विकल्प, वरना होगा नुकसान
- गोल्ड ईटीएफ, कमोडिटी फंड और मल्टी-एसेट फंड के फर्क को समझना बेहद जरूरी
- कमोडिटी फंड्स वास्तव में सीधे सोने या चांदी में निवेश नहीं करते
- ये उन कंपनियों के शेयरों में पैसा लगाते हैं जो माइनिंग, मेटल या एनर्जी सेक्टर से जुड़ी

शेयर बाजार और फिक्स्ड डिपॉजिट से आगे बढ़ते हुए अब निवेशक सोना, चांदी, मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड और अन्य कमोडिटी विकल्पों की ओर तेजी से रुख कर रहे हैं। महंगाई, वैश्विक अनिश्चितता और बाजार में उतार-चढ़ाव के दौर में ये एसेट क्लास पोर्टफोलियो को संतुलन देने का काम करते हैं। लेकिन समस्या तब पैदा होती है, जब निवेशक अलग-अलग विकल्पों कमोडिटी फंड, गोल्ड-सिल्वर ईटीएफ और मल्टी-एसेट फंड को एक जैसा मान लेते हैं। यही भ्रम कई बार गलत निवेश फैसलों और नुकसान की वजह बनता है। सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि कमोडिटी फंड्स वास्तव में सीधे सोने या चांदी में निवेश नहीं करते। ये फंड उन कंपनियों के शेयरों में पैसा लगाते हैं जो माइनिंग, मेटल या एनर्जी सेक्टर से जुड़ी होती हैं। यानी इनका प्रदर्शन केवल कमोडिटी की कीमत पर नहीं, बल्कि उन कंपनियों के बिजनेस, मैनेजमेंट और मार्केट कंडीशन पर भी निर्भर करता है। इस कारण ये फंड तकनीकी रूप से इक्विटी फंड की श्रेणी में आते हैं और इनमें जोखिम भी उसी के अनुरूप अधिक होता है।

कमोडिटी फंड : हाई रिस्क, साइकिल पर निर्भर रिटर्न

कमोडिटी फंड्स का प्रदर्शन "कमोडिटी साइकिल" पर आधारित होता है। जब मेटल या एनर्जी सेक्टर में तेजी आती है, तो ये फंड अच्छा रिटर्न दे सकते हैं, लेकिन गिरावट के समय इनका प्रदर्शन तेजी से नीचे भी आ सकता है। यही वजह है कि विशेषज्ञ इन्हें लॉन्ग टर्म कोर इन्वेस्टमेंट के रूप में नहीं देखते। आमतौर पर 1 से 3 साल के लिए, किसी खास सेक्टर में तेजी का फायदा उठाने के लिए ही इनका उपयोग किया जाता है। निवेश सलाहकारों के अनुसार, पोर्टफोलियो में इनका हिस्सा 5% से 10% से ज्यादा नहीं होना चाहिए। अधिक निवेश जोखिम को बढ़ा सकता है। साथ ही, इनमें निवेश करने से पहले बाजार की स्थिति और सेक्टर ट्रेंड को समझना बेहद जरूरी है।

गोल्ड और सिल्वर ईटीएफ कीमत से जुड़ा निवेश

अगर आपका उद्देश्य सीधे सोने या चांदी की कीमतों में होने वाले बदलाव का लाभ उठाना है, तो गोल्ड ईटीएफ और सिल्वर ईटीएफ बेहतर विकल्प हैं। ये फंड फिजिकल गोल्ड या सिल्वर की कीमत को ट्रैक करते हैं, यानी इनका रिटर्न सीधे धातु की कीमत पर निर्भर करता है। इनका सबसे बड़ा फायदा यह है कि आपको फिजिकल गोल्ड खरीदने, स्टोर करने या उसकी सुरक्षा की चिंता नहीं करनी पड़ती। साथ ही, इनकी पारदर्शिता और लिक्विडिटी भी अधिक होती है, क्योंकि इन्हें शेयर बाजार में आसानी से खरीदा और बेचा जा सकता है। हालांकि, इनका रिटर्न आमतौर पर स्थिर और सीमित होता है। ये तेजी से मल्टीबैगर रिटर्न देने के बजाय पोर्टफोलियो को स्थिरता देने का काम करते हैं। इसलिए इन्हें "सेफ हेवन" या हेजिंग टूल के रूप में देखा जाता है।

मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड : संतुलित निवेश का विकल्प

दूसरी ओर, मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड उन निवेशकों के लिए बेहतर विकल्प हैं, जो एक ही निवेश में विविधता (डाइवर्सिफिकेशन) चाहते हैं। ये फंड इक्विटी, डेट और कमोडिटी तीनों एसेट क्लास में निवेश करते हैं। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि जब एक एसेट क्लास कमजोर प्रदर्शन करता है, तो दूसरा उसे संतुलित कर देता है। उदाहरण के लिए, शेयर बाजार में गिरावट के दौरान सोना बेहतर प्रदर्शन कर सकता है, जिससे कुल पोर्टफोलियो पर असर कम होता है।

पिछले आंकड़ों पर न जाएं

बाजार में आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड, एसबीआई म्यूचुअल फंड और क्वांट म्यूचुअल फंड जैसे कई कमोडिटी या मल्टी-एसेट फंड्स उपलब्ध हैं, जिन्होंने पिछले कुछ वर्षों में 20-22% तक का रिटर्न दिया है, लेकिन विशेषज्ञ साफ कहते हैं कि केवल पिछले प्रदर्शन के आधार पर निवेश का फैसला लेना गलत हो सकता है। कमोडिटी सेक्टर स्वभाव से ही अस्थिर होता है। इसलिए इसमें औसतन 10-12% सीएजीआर की उम्मीद रखना ज्यादा व्यावहारिक है।

समझदारी से करें संतुलन

निवेश का कोई एक "सही" विकल्प नहीं होता। यह पूरी तरह आपके लक्ष्य, जोखिम क्षमता और निवेश अवधि पर निर्भर करता है। गोल्ड ईटीएफ और मल्टी-एसेट फंड्स आम निवेशकों के लिए बेहतर और सुरक्षित विकल्प माने जाते हैं, जबकि कमोडिटी फंड्स केवल समझदार और अनुभवी निवेशकों के लिए ही उपयुक्त हैं। अंततः, एक संतुलित पोर्टफोलियो ही लंबे समय में बेहतर रिटर्न और कम जोखिम सुनिश्चित करता है। इसलिए निवेश से पहले जरूरतें समझें, जल्दबाजी से बचें और जहां जरूरी हो, वित्तीय सलाहकार की मदद लें ताकि आपका पैसा सही दिशा में काम कर सके।

स्मॉलकैप एक माह में 10% उछला
जोखिम भी उतना ही बढ़ा

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

पिछले एक महीने में स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड्स ने निवेशकों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। औसतन 10% तक का रिटर्न देकर इस सेगमेंट ने लार्ज और मिडकैप फंड्स को पीछे छोड़ दिया है। ऐसे में कई निवेशकों के मन में सवाल उठ रहा है क्या यह तेजी लंबे समय के बुल रन की शुरुआत है या फिर यह सिर्फ गिरावट के बाद आई एक अस्थायी रिकवरी? विशेषज्ञों का मानना है कि इस तेजी को समझदारी से देखना जरूरी है, क्योंकि जल्दबाजी में लिया गया फैसला नुकसान भी करा सकता है। हालिया आंकड़ों के मुताबिक, स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड्स ने पिछले एक महीने में औसतन करीब 10% रिटर्न दिया है। कुछ फंड्स ने तो इससे भी ज्यादा प्रदर्शन किया है, जिससे निवेशकों का भरोसा इस सेगमेंट में फिर से बढ़ा है। हालांकि, सभी फंड्स का प्रदर्शन एक जैसा नहीं रहा। जहां कुछ फंड्स ने दो अंकों का रिटर्न दिया, वहीं कुछ ने नेगेटिव रिटर्न भी दिखाया। इससे साफ है कि यह तेजी पूरे सेगमेंट में समान रूप से नहीं फैली है।

तेजी की वजह: लिक्विडिटी और एसआईपी का सहारा

विशेषज्ञों के अनुसार, स्मॉलकैप फंड्स में आई इस तेजी के पीछे कई कारण हैं। बाजार में बढ़ती लिक्विडिटी, निवेशकों की जोखिम लेने की क्षमता में सुधार और लगातार आने वाला एसआईपी निवेश इस उछाल को सपोर्ट कर रहा है। जब बाजार में नकदी ज्यादा होती है, तो उसका असर छोटे शेयरों पर जल्दी दिखाई देता है। इसी वजह से स्मॉलकैप शेयरों में तेजी अक्सर तेज और अचानक होती है।

क्या यह स्थायी बुल रन है या शॉर्ट टर्म रिकवरी?

यहीं सबसे बड़ा सवाल खड़ा होता है। एक्सपर्ट्स का मानना है कि फिलहाल यह तेजी एक शॉर्ट टर्म रिकवरी ज्यादा लगती है, न कि लंबी अवधि की स्थायी तेजी। स्मॉलकैप सेगमेंट में उतार-चढ़ाव ज्यादा होता है। गिरावट के बाद तेज उछाल आना आम बात है। इसलिए केवल एक महीने के रिटर्न के आधार पर निवेश का फैसला लेना जोखिम भरा हो सकता है।

वैल्यूएशन बनी चिंता

हालिया तेजी के बाद स्मॉलकैप शेयरों की वैल्यूएशन फिर से ऊंची नजर आने लगी है। उदाहरण के तौर पर, निफ्टी स्मॉलकैप 100 का फॉरवर्ड पी/ई अपने लंबे औसत से ऊपर चल रहा है। इसका मतलब है कि शेयरों की कीमतें उनकी कमाई के मुकाबले ज्यादा हो चुकी हैं। ऐसे में आगे रिटर्न सीमित हो सकता है या फिर बाजार में करेक्शन देखने को मिल सकता है।

हर निवेशक के लिए सही नहीं

स्मॉलकैप फंड्स हाई रिस्क कैटेगरी में आते हैं। इनमें तेजी के साथ-साथ गिरावट भी उतनी ही तेज होती है। इसलिए यह हर निवेशक के लिए उपयुक्त नहीं हैं। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि अगर आपका निवेश समय 7 से 10 साल या उससे ज्यादा है, तभी इस सेगमेंट में निवेश करना चाहिए।

एसआईपी और एसटीपी से एंट्री

स्मॉलकैप में एकमुश्त निवेश करने के बजाय एसआईपी या एसटीपी के जरिए धीरे-धीरे निवेश करना बेहतर रणनीति मानी जाती है। इससे बाजार के उतार-चढ़ाव का असर कम होता है और आप अलग-अलग स्तरों पर निवेश कर पाते हैं, जिससे औसत लागत संतुलित रहती है।

पोर्टफोलियो में सीमित हिस्सा

एक संतुलित निवेश रणनीति के तहत स्मॉलकैप फंड्स का हिस्सा पोर्टफोलियो में सीमित रखना चाहिए। आमतौर पर 10% से 20% तक का एक्सपोजर पर्याप्त माना जाता है, जो जोखिम और रिटर्न के बीच संतुलन बनाए रखता है। इसके अलावा, फ्लेक्सी कैप और मल्टीकैप फंड्स जैसे विकल्प भी बेहतर संतुलन प्रदान कर सकते हैं।

पीछे भागना क्यों खतरनाक

अक्सर निवेशक हालिया प्रदर्शन देखकर आकर्षित हो जाते हैं और तेजी से निवेश कर देते हैं। लेकिन 10% जैसे अल्पकालिक रिटर्न का पीछा करना सही रणनीति नहीं है। बाजार में ऐसे मूवमेंट अस्थायी होते हैं और समय के साथ संतुलित हो जाते हैं। इसलिए केवल हालिया रिटर्न देखकर निवेश करना नुकसान का कारण बन सकता है।

अवसर है, पर अलर्ट रहें

स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड्स में हालिया तेजी निश्चित रूप से ध्यान देने योग्य है, लेकिन इसे "पैसे छापने का मौका" मानना जल्दबाजी होगी। लंबी अवधि के निवेशक एसआईपी के जरिए इसमें धीरे-धीरे निवेश कर सकते हैं, लेकिन पोर्टफोलियो में संतुलन बनाए रखना बेहद जरूरी है।

एमएफ के नाम में छिपा पूरा खेल : 'डायरेक्ट रेगूलर और ग्रोथ' का सही मतलब समझें

म्यूचुअल फंड में निवेश करना आजकल बहुत आसान हो गया है, लेकिन सही फंड का चुनाव करना आज भी कई लोगों के लिए बड़ी चुनौती है। बता दें कि जब आप किसी ऐप या वेबसाइट पर फंड सर्च करते हैं, तो एक ही नाम के कई ऑप्शन नजर आते हैं। दरअसल, इन नामों में निवेश की पूरी रणनीति छिपी होती है। अगर आप इन बेसिक शब्दों का मतलब समझ लेते हैं, तो आप अपने वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार सही फंड का चुनाव कर सकते हैं।

निवेश की कैटेगरी को पहचानें

म्यूचुअल फंड के नाम की शुरुआत एएमसी से होती है, जैसे एसबीआई, अक्षम या आईसीआईसीआई प्रूडेंटियल। यह वो संस्था है जो आपके पैसे को मैनेज करती है। नाम के अगले हिस्से में फंड की कैटेगरी होती है। जैसे लार्ज कैप का अर्थ है कि पैसा देश की टॉप 100 सुरक्षित कंपनियों में लगेगा। वहीं, स्मॉल कैप या मिड कैप में पैसा उन कंपनियों में लगाया जाता है जो तेजी से बढ़ रही हैं, हालांकि इनमें जोखिम थोड़ा ज्यादा होता है।

खर्च और मुनाफे का अंतर

फंड के नाम में डायरेक्ट और रेगूलर सबसे अहम शब्द हैं। डायरेक्ट का मतलब है कि आप सीधे फंड हाउस के साथ निवेश कर रहे हैं। इसमें कोई एजेंट नहीं होता, इसलिए एक्सपेंस रेशियो कम होता है और आपका मुनाफा बढ़ जाता है। इसके विपरीत, रेगूलर प्लान किसी बैंक या ब्रोकर के जरिए लिया जाता है, जहां आपको दी जाने वाली सुविधाओं के बदले कंपनी एजेंट को कमीशन देती है, जिससे आपका शुद्ध मुनाफा थोड़ा कम हो जाता है।

रिटर्न पाने का तरीका चुनें

नाम के आखिरी हिस्से में आपको ग्रोथ या आईडीडब्ल्यूसी लिखा मिलेगा। बता दें कि अगर आप लंबे समय के लिए पैसा जोड़ना चाहते हैं, ग्रोथ ऑप्शन चुनें क्योंकि इसमें मुनाफे पर कंपाउंडिंग का लाभ मिलता है। लेकिन अगर आप चाहते हैं कि आपको निवेश के बीच-बीच में कुछ कमाई मिलती रहे, तो आईडीडब्ल्यूसी प्लान लिया जा सकता है।

स्मार्ट निवेशक बनने के लिए जरूरी टिप्स

म्यूचुअल फंड चुनते समय सिर्फ पिछले रिटर्न को ना देखें, बल्कि इन चारों यानी एएमसी, कैटेगरी, प्लान टाइप और रिटर्न मोड को परखें। अपनी रिस्क लेने की क्षमता और समय सीमा के आधार पर ही सही ऑप्शन का चुनाव करें। हमेशा कोशिश करें कि डायरेक्ट और ग्रोथ ऑप्संश पर गौर करें जिससे लंबी समय में आपकी जमा पूंजी पर कमीशन का बोझ न पड़े और आपको अधिकतम लाभ मिल सके। म्यूचुअल फंड का नाम भले ही जटिल लगे, लेकिन इसमें निवेश का पूरा ब्लूप्रिंट छिपा होता है। म्यूचुअल फंड में सफल होने के लिए जरूरी है कि आप इन बुनियादी शब्दों को समझें और सोच-समझकर फैसला लें। सही जानकारी के साथ किया गया निवेश ही लंबे समय में संपत्ति निर्माण का मजबूत आधार बनता है।

बिजनेस डेस्क

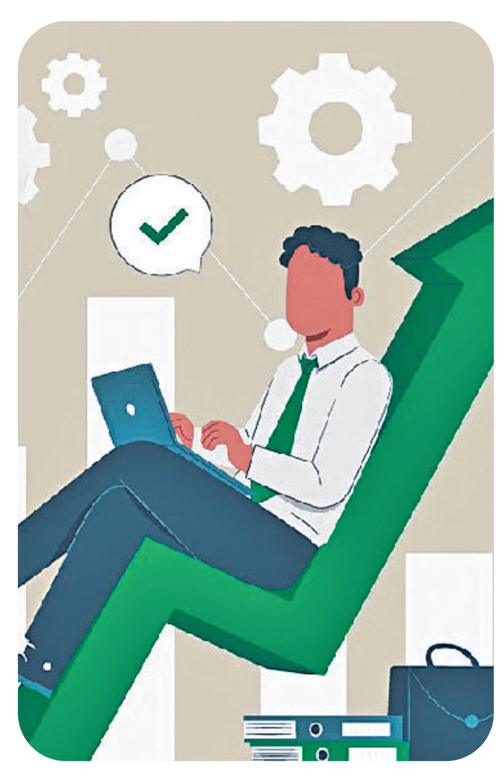

अब आईटीआर में गलती की तो पड़ सकती है भारी

गलत इनकम बताई तो 200% तक जुर्माना

- छोटी चूक भी बन सकती है बड़ी सजा का कारण
- जानबूझकर जानकारी छिपाने पर दोगुना तक जुर्माना
- लेट फाइलिंग व दस्तावेजों में कमी पर भी कड़ा प्रावधान

बिजनेस डेस्क

आयकर रिटर्न यानी आईटीआर भरना अब केवल एक औपचारिक प्रक्रिया नहीं रह गया है, बल्कि यह पूरी तरह जिम्मेदारी और सतर्कता का काम बन चुका है। आयकर विभाग ने असेसमेंट ईयर 2026–27 के लिए नया पेनल्टी फ्रेमवर्क लागू किया है, जिसमें गलत जानकारी देने वाले टैक्सपेयर्स पर कड़ी कार्रवाई का प्रावधान किया गया है। इस नए सिस्टम का मकसद साफ है। टैक्स अनुपालन को सख्ती से लागू करना और किसी भी तरह की लापरवाही या हेरफेर को हतोत्साहित करना।

गलत इनकम दिखाना पड़ सकता है भारी

नए नियमों के तहत यदि कोई टैक्सपेयर्स अपनी वास्तविक आय से कम इनकम दिखाता है, तो उसे देय टैक्स पर 50 प्रतिशत तक जुर्माना भरना पड़ सकता है। यह जुर्माना उन मामलों में लागू होता है जहां गलती को अनजाने में हुई चूक माना जाता है। लेकिन अगर जांच में यह साबित हो जाता है कि इनकम को जानबूझकर छिपाया गया है या गलत जानकारी दी गई है, तो सजा और भी कड़ी हो जाती है। ऐसे मामलों में पेनल्टी बढ़ाकर 200 प्रतिशत तक की जा सकती है। यानी जितना टैक्स बचाने की कोशिश की गई, उसका दोगुना तक जुर्माना देना पड़ सकता है।

जानबूझकर गलती और सामान्य चूक में फर्क

सरकार ने इस बार नियमों में यह स्पष्ट किया है कि जानबूझकर की गई गलती और सामान्य त्रुटि में अंतर किया जाएगा। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति ने भूलवश कोई इनकम जोड़ना रह गया, तो उसे उतनी सख्ती से नहीं देखा जाएगा जितना कि किसी ऐसे मामले को जहां दस्तावेज छिपाए गए हों या फर्जी एंट्री की गई हो। यह अंतर इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे ईमानदार टैक्सपेयर्स को राहत मिलती है, जबकि धोखाधड़ी करने वालों पर सख्ती बढ़ती है।

लेट आईटीआर पर भी सख्त नियम

समय पर आईटीआर फाइल न करने पर भी अब जुर्माने का प्रावधान पहले से स्पष्ट और कड़ा कर दिया गया है। यदि कोई व्यक्ति तय समय सीमा के बाद आईटीआर भरता है, तो उसे अधिकतम 5000 रुपये तक का जुर्माना देना पड़ सकता है। हालांकि, जिन टैक्सपेयर्स की सालाना आय 5 लाख रुपये तक है, उनके लिए राहत देते हुए जुर्माना 1000 रुपये तक सीमित रखा गया है। इसका उद्देश्य छोटे करदाताओं को अनावश्यक बोझ से बचाना है, लेकिन समय पर फाइलिंग की जिम्मेदारी से छूट नहीं दी गई है।

टीडीएस और अन्य दस्तावेजों में देरी भी महंगी

सिर्फ आईटीआर ही नहीं, बल्कि टीडीएस और अन्य जरूरी स्टेटमेंट समय पर जमा न करने पर भी सख्त कार्रवाई का प्रावधान है। ऐसे मामलों में 200 रुपये प्रतिदिन के हिसाब से जुर्माना लगाया जा सकता है, जो समय के साथ बड़ी राशि में बदल सकता है। इससे साफ है कि टैक्स सिस्टम अब पूरी तरह समयबद्ध और अनुशासित हो चुका है, जहां हर देरी की कीमत चुकानी पड़ सकती है।

टैक्स बकाया रखने पर भी कार्रवाई

यदि कोई व्यक्ति अपना सेल्फ-असेसमेंट टैक्स समय पर नहीं चुकाता है, तो उस पर भी पेनल्टी लग सकती है। यह पेनल्टी असेसिंग ऑफिसर द्वारा तय की जाती है और कई मामलों में बकाया टैक्स के बराबर तक हो सकती है। गंभीर मामलों में, खासकर जब जांच के दौरान छिपी हुई आय सामने आती है, तो 10 प्रतिशत से लेकर 60 प्रतिशत तक अतिरिक्त जुर्माना भी लगाया जा सकता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि गलती कितनी गंभीर है और उसे कब उजागर किया गया।

अन्य उल्लंघनों पर कड़ी नजर

नए नियम केवल इनकम छिपाने तक सीमित नहीं हैं। यदि कोई व्यक्ति अपने अकाउंट बुक्स ठीक से नहीं रखता, जरूरी ऑडिट नहीं कराता, दस्तावेज समय पर जमा नहीं करता या कैश ट्रांजैक्शन के नियमों का उल्लंघन करता है, तो उस पर भी जुर्माना लगाया जा सकता है। कुछ मामलों में यह जुर्माना लेन-देन की पूरी राशि के बराबर तक हो सकता है, जो किसी भी व्यवसाय या व्यक्ति के लिए बड़ा वित्तीय झटका साबित हो सकता है।

राहत के प्रावधान भी मौजूद

हालांकि सख्ती के बीच सरकार ने कुछ राहत के विकल्प भी दिए हैं। यदि कोई टैक्सपेयर्स यह साबित कर देता है कि उससे हुई गलती किसी वाजिब कारण से हुई थी, जैसे तकनीकी समस्या या वास्तविक भूल, तो उस पर पेनल्टी नहीं लगाई जाएगी। इसके अलावा, कुछ मामलों में अपील और स्पष्टीकरण के आधार पर भी जुर्माने में राहत मिल सकती है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि ईमानदार करदाता अनावश्यक रूप से परेशान न हों।

सतर्कता ही बचाव का सबसे बड़ा तरीका

इन नए नियमों के बाद यह साफ हो गया है कि आईटीआर भरते समय लापरवाही की कोई गुंजाइश नहीं है। हर जानकारी को सही दस्तावेजों के साथ जांचकर ही भरना चाहिए। विशेषज्ञों की सलाह है कि यदि टैक्स फाइलिंग को लेकर किसी भी तरह का संदेह हो, तो पेशेवर सलाह लेना बेहतर है। छोटी सी गलती भी बड़े जुर्माने में बदल सकती है, इसलिए सतर्क रहना ही सबसे सुरक्षित विकल्प है।

आयकर विभाग का स्पष्ट संदेश

नए पेनल्टी नियम यह संकेत देते हैं कि टैक्स सिस्टम अब ज्यादा पारदर्शी और सख्त हो चुका है। आयकर विभाग का स्पष्ट संदेश है ईमानदारी से टैक्स भरें या भारी जुर्माने के लिए तैयार रहें। ऐसे में समझदारी इसी में है कि जल्दबाजी या लापरवाही से बचते हुए पूरी सावधानी के साथ आईटीआर फाइल किया जाए, क्योंकि अब छोटी गलती भी बड़ी सजा में बदल सकती है।

25,000 की एसआईपी के लिए 3 से 5 फंड ही काफी

छोटी एसआईपी में बंटवारे से कंपाउंडिंग पर पड़ता है असर

म्यूचुअल फंड पोर्टफोलियो में भीड़ बढ़ाना पड़ सकता है भारी, घट सकता है रिटर्न

बिजनेस डेस्क

अक्सर निवेशक यह मान लेते हैं कि ज्यादा म्यूचुअल फंड्स में पैसा लगाने से जोखिम कम हो जाता है और रिटर्न बेहतर मिलता है। इसी सोच के चलते कई लोग 10 से 12 या उससे भी ज्यादा फंड्स में एसआईपी शुरू कर देते हैं। लेकिन हकीकत इससे उलट है। जरूरत से ज्यादा फंड्स रखने से न तो जोखिम कम होता है और न ही रिटर्न बढ़ता है, बल्कि आपका पोर्टफोलियो उलझ जाता है और मुनाफा कम हो सकता है। खासतौर पर अगर आपकी मासिक एसआईपी 25,000 रुपये के आसपास है, तो 3 से 5 अच्छे फंड्स का चयन ही बेहतर रणनीति मानी जाती है।

ज्यादा फंड्स रखना क्यों नुकसान का सौदा

म्यूचुअल फंड निवेश का मूल सिद्धांत है। विविधता, लेकिन कई निवेशक इस सिद्धांत को गलत तरीके से समझ लेते हैं। वे सोचते हैं कि अलग-अलग (एसेट मैनेजमेंट कंपनी) के ज्यादा फंड्स खरीदना ही विविधता है, जबकि ऐसा नहीं है। अगर आपके पास 10–12 फंड्स हैं, तो संभव है कि उनमें से कई एक ही सेक्टर या एक जैसे शेयरों में निवेश कर रहे हों। ऐसे में आपका पोर्टफोलियो देखने में तो बड़ा लगता है, लेकिन असल में वह विविध नहीं होता। विशेषज्ञ मानते हैं कि सीमित और चुने हुए फंड्स के जरिए बेहतर नियंत्रण और संतुलन बनाना ज्यादा आसान होता है। इससे निवेश की दिशा स्पष्ट रहती है और अनावश्यक जटिलता से बचाव होता है।

अलग नाम, लेकिन निवेश वही

जब आप कई फंड्स में निवेश करते हैं, तो एक बड़ी समस्या होती है—पोर्टफोलियो ओवरलैप। मान लीजिए आपने दो या तीन लार्ज-कैप फंड्स ले रखे हैं। इनमें से हर फंड में रिलायंस, इन्फोसिस या एचडीएफसी बैंक जैसे बड़े शेयर टॉप होल्डिंग में हो सकते हैं। इसका मतलब है कि आप अलग-अलग फंड्स के जरिए एक ही कंपनियों में बार-बार निवेश कर रहे हैं।

इससे दो नुकसान होते हैं

जोखिम कम होने की बजाय बढ़ सकता है, क्योंकि बाजार गिरने पर सभी फंड्स एक साथ प्रभावित होते हैं। आप हर फंड का अलग-अलग एक्स्पेंस रेशियो (खर्च) भी देते हैं, जिससे कुल रिटर्न घटता है। इस तरह, ज्यादा फंड्स रखने से निवेश में विविधता का भ्रम तो बनता है, लेकिन असल फायदा नहीं मिलता।

छोटी एसआईपी से कंपाउंडिंग कमजोर

यदि 25,000 की मासिक एसआईपी को आप 8 या 10 फंड्स में बांटते हैं, तो हर फंड में बहुत कम राशि जाती है। उदाहरण के तौर पर 8 फंड्स में निवेश करने पर हर फंड में सिर्फ 3,125 ही जाएंगे। इतनी छोटी राशि में कंपाउंडिंग का प्रभाव कमजोर पड़ जाता है। लंबे समय में बड़ा कॉर्पस बनाने के लिए जरूरी है कि हर फंड में पर्याप्त निवेश हो, ताकि उसका ग्रोथ प्रभावी तरीके से दिखाई दे। अगर यही 25,000 रुपये आप 3 या 4 फंड्स में लगाते हैं, तो हर फंड में 6,000 से 8,000 रुपये तक का निवेश होगा, जिससे रिटर्न बेहतर तरीके से बढ़ सकता है।

ट्रैकिंग और मैनेजमेंट बन जाता है मुश्किल

ज्यादा फंड्स का एक और बड़ा नुकसान है—उन्हें ट्रैक करना कठिन हो जाता है। हर फंड का प्रदर्शन अलग होता है। कुछ अच्छा रिटर्न देते हैं, तो कुछ कमजोर प्रदर्शन करते हैं। अगर आपके पास बहुत ज्यादा फंड्स हैं, तो यह समझना मुश्किल हो जाता है कि कौन सा फंड अच्छा कर रहा है और किसे बदलने की जरूरत है। इसके अलावा, कमजोर फंड्स आपके पूरे पोर्टफोलियो के रिटर्न को नीचे खींच लेते हैं। इसे "डाइल्यूशन" कहा जाता है। यानी अच्छे फंड्स का फायदा भी पूरी तरह नहीं मिल पाता।

आदर्श पोर्टफोलियो कैसा हो

विशेषज्ञों के अनुसार 25,000 रुपये की एसआईपी के लिए 3 से 5 फंड्स का पोर्टफोलियो पर्याप्त होता है। इससे निवेश में संतुलन बना रहता है और जोखिम भी नियंत्रित रहता है। एक संतुलित पोर्टफोलियो के लिए आप इन कैटेगरी पर विचार कर सकते हैं।

- लार्ज-कैप या इंडेक्स फंड
  स्थिरता के लिए
- लार्ज एंड मिड-कैप फंड
  ग्रोथ और स्थिरता का मिश्रण
- मल्टी-कैप या फ्लेक्सी-कैप फंड
  अलग-अलग मार्केट कैप में निवेश
- एग्रेसिव हाइब्रिड फंड
  इक्विटी और डेट का संतुलन
- ईएलएसएस फंड (टैक्स सेविंग)
  टैक्स बचत के साथ निवेश
- हर निवेशक अपनी जोखिम क्षमता, लक्ष्य और समय अवधि के अनुसार इन कैटेगरी में 3–5 फंड्स चुन सकता है।

कैसे सुधारें अपना मौजूदा पोर्टफोलियो

अगर आपके पोर्टफोलियो में पहले से ही बहुत ज्यादा फंड्स हैं, तो घबराने की जरूरत नहीं है। आप इसे धीरे-धीरे सुधार सकते हैं। सबसे पहले, ओवरलैप चेक करें। इसके लिए कई ऑनलाइन टूल्स उपलब्ध हैं, जो बताते हैं कि आपके फंड्स में कितनी समानता है। इसके बाद उन फंड्स को पहचानें जो लगातार 2–3 साल से अपने बेंचमार्क से कमजोर प्रदर्शन कर रहे हैं। ऐसे फंड्स को धीरे-धीरे बाहर निकालें। ध्यान रखें कि एक ही कैटेगरी के कई फंड्स रखने से बचें। हर कैटेगरी से एक अच्छा और भरोसेमंद फंड चुनना बेहतर होता है। साथ ही, पोर्टफोलियो में बदलाव एकदम से न करें, बल्कि चरणबद्ध तरीके से करें ताकि बाजार के उतार-चढ़ाव का असर कम पड़े।

विविधता का सही मतलब समझें

असली विविधता का मतलब यह नहीं है कि आप ज्यादा से ज्यादा फंड्स खरीद लें। बल्कि इसका मतलब है कि आप अलग-अलग एसेट क्लास और कैटेगरी में निवेश करें। अगर आपने अलग-अलग कैटेगरी के 3–5 फंड्स चुने हैं, तो यह पर्याप्त विविधता देता है। इसके विपरीत, एक ही कैटेगरी के 8–10 फंड्स रखना सिर्फ जटिलता बढ़ाता है। इसलिए निवेश करते समय "कम लेकिन बेहतर" की रणनीति अपनाना ज्यादा समझदारी भरा कदम है।

यह रखें ध्यान

म्यूचुअल फंड निवेश में संख्या नहीं, गुणवत्ता मायने रखती है। ज्यादा फंड्स रखने से पोर्टफोलियो मजबूत नहीं होता, बल्कि उलझन बढ़ती है और रिटर्न पर असर पड़ता है। 25,000 रुपये की एसआईपी के लिए 3 से 5 अच्छी तरह चुने गए फंड्स ही पर्याप्त हैं। इससे न केवल कंपाउंडिंग का फायदा बेहतर मिलता है, बल्कि निवेश को समझना और मैनेज करना भी आसान रहता है। अंततः, सफल निवेश वही है जो सरल, संतुलित और आपके लक्ष्यों के अनुरूप हो।

खबर संक्षेप

विद्यार्थियों ने हीरो मोटोकॉर्प का किया शैक्षणिक भ्रमण

मीरपुर। इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग की ओर से एमकॉम ऑनर्स छठे सेमेस्टर के विद्यार्थियों को हीरो मोटोकॉर्प लिमिटेड धारूहेड़ा का शैक्षणिक भ्रमण कराया गया। विभागाध्यक्ष प्रोफेसर रविंदर ने भ्रमण का नेतृत्व किया। विद्यार्थियों के दल का संचालन डा. संदीप कुमार, डा. प्रियंका और ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट ऑफिसर प्रवीण ने किया। भ्रमण के दौरान हीरो मोटोकॉर्प के एचआर हेड अमित मलिक ने विद्यार्थियों के साथ संवाद सत्र किया। उन्होंने छात्रों को प्लांट की कार्यप्रणाली, कॉर्पोरेट कल्चर और भविष्य की औद्योगिक आवश्यकताओं के बारे में जानकारी दी। योगेश सीनियर टेक्नीशियन ने प्लांट के बारे में तकनीकी जानकारी दी।

रोहिंग्या व बांग्लादेशियों के लिए चला सर्च अभियान

रेवाड़ी। जिला पुलिस व स्वैत टीम ने शनिवार को धारूहेड़ा क्षेत्र में अनाधिकृत रूप से रहने वाले रोहिंग्या व बांग्लादेशी नागरिकों का पता लगाने के लिए सर्च अभियान चलाया। अभियान के दौरान पुलिस ने झुग्गी-झोपड़ियों, होटल, पोल्ट्री फार्म व अन्य स्थानों पर संदिग्ध लोगों की जांच की। पुलिस टीम ने बाहरी श्रमिकों के पहचान पत्रों व वाहनों के कागजातों की भी जांच की। एसपी हेमेंद्र कुमार मीणा ने कहा कि जिले अनाधिकृत रूप से किसी को भी रहने की छूट नहीं है। जिले में रहने वाले बाहरी लोगों की पहचान होना अत्यंत आवश्यक है। एसपी ने जिला वासियों से अपील करते हुए कहा कि वे अपने पास काम करने वाले या किराए पर रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति की पुलिस वेरिफिकेशन जरूर करवा लें, अगर भविष्य में कोई व्यक्ति ऐसा नहीं करता तो उसके खिलाफ भी कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

अरावली में हिंदी लेखन प्रतियोगिता आयोजित

महेंद्रगढ़। अरावली इंटरनेशनल स्कूल में इंटरहाउस हिंदी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें सभी हाउस के बच्चों ने हिस्सा लिया और अपने विचार को सुंदर शब्दों में प्रस्तुत किया। विभिन्न विषय पर बच्चों की रचनात्मक और लेखन कौशल देखने को मिला। प्रतियोगिता में दूसरी व तीसरी कक्षा के विजेता छात्र यश व अंशिका हिमांशी काव्या रहे, चौथी से छठी कक्षा के विजेता छात्र लक्ष्य, काव्या, रियू, अन्नु, रिशिका व सातवी से आठवीं कक्षा के विजेता छात्र तरुण, मानवी, लक्ष्य प्रथम स्थान पर रहे। हिंदी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन संजय, मनोज, प्रवीण, धर्मेन्द्र आदि अध्यापकों ने किया। स्कूल संचालक अशोक ने सभी प्रतिभागी व विजेता टीम के छात्रों को बधाई दी।

निवर्तमान चेयरमैन ने पिछले चुनाव में करा दी थी विपक्षियों की जमानत जब्त

कंवर सिंह के लिए इतिहास दोहराना नहीं आसान काम

वाइस चेयरमैन रहे जांगड़ा को कड़ी चुनौती देना इस बार नहीं होगा आसान

विनीता पीपल।

शकुंतला भांडोरिया।

अजय जांगड़ा।

कंवर सिंह यादव।

नरेन्द्र वत्स ▶▶ रेवाड़ी

नगर परिषद और धारूहेड़ा नगर पालिका चुनाव के लिए नामांकन का दौर शनिवार को समाप्त हो गया। नगर परिषद चेयरमैन के लिए 7 और धारूहेड़ा नगर पालिका चेयरमैन के लिए 12 प्रत्याशियों ने नामांकन दाखिल किए हैं। छंटनी और नाम वापस लेने की प्रक्रिया पूरी होने तक शहर में चार से पांच और धारूहेड़ा में सात से आठ चेहरे की मैदान में शेष रह सकते हैं। धारूहेड़ा के निवर्तमान चेयरमैन कंवर सिंह के लिए इतिहास दोहराने की राह इस बार काफी कठिन हो चुकी है, जबकि नगर परिषद चेयरमैन के लिए जीत का दारोमदार पूरी तरह से 'टीम राव' के कंधों पर रहेगा। दोनों निकाय में मैदान में उतरने वाले प्रभावी चेहरों को 'एंटी राव' खेमे और कांग्रेस के असंतुष्टों से मदद की उम्मीद है, लेकिन अभी इस मामले में तस्वीर साफ होने में समय लगेगा।

नगर परिषद के वर्ष 2020 में हुए चुनावों में पूनम यादव को भाजपा की टिकट मिली थी। पूनम को टिकट दिए जाने का पार्टी के एक खेमे की ओर से पूरा विरोध किया गया था। पूर्व जिला प्रमुख सतीश यादव ने अपनी पत्नी उपमा को चुनाव मैदान में उतारा था, जबकि कांग्रेस से विक्रम यादव पूर्व मंत्री कैप्टन अजय सिंह यादव के समर्थन से टिकट हासिल करने के बाद में मैदान में उतरी थीं। पूर्व विधायक रणधीर सिंह कापड़ीवास ने राव समर्थित पूनम यादव को हराने के लिए अपने समर्थकों का रुख उपमा की ओर मोड़ दिया था। यही कारण था कि कांग्रेस प्रत्याशी विक्रम यादव को पीछे छोड़ते हुए उपमा यादव दूसरे स्थान पर आने में कामयाब रही थीं। कांग्रेस प्रत्याशी तीसरे नंबर पर रहते हुए जमानत तक नहीं बचा सकी थीं। इस बार भाजपा में हालात लगभग समान ही हैं, लेकिन राव विरोधी खेमे की ओर से सुगबुगाहट तेज नहीं हुई है। प्रमुख निर्दलीय प्रत्याशियों की नजरें इसी खेमे पर टिकी हुई हैं। कुछ प्रत्याशी इस खेमे का अंदरखाने समर्थन मिलने के दावे भी करने लगे हैं।

निर्दलीय प्रत्याशियों को राव खेमे से मदद की उम्मीद, अंदरखाने से समर्थन के दावे कर रहे उम्मीदवार

सभी प्रत्याशियों की जमानत हुई थी जब्त

धारूहेड़ा नगर पालिका के पिछले चुनाव में कंवर सिंह यादव निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में मैदान में उतरे थे। उनके सामने 6 प्रत्याशी चुनाव मैदान में थे। भाजपा और जेजेपी का संयुक्त प्रत्याशी था, लेकिन कंवर सिंह को टक्कर निर्दलीय संदीप बोहरा से मिली थी। बोहरा दूसरे नंबर पर रहे थे, जबकि विजेता कंवर सिंह को छोड़कर कोई जमानत राशि बचाने में कामयाब नहीं रहा था। इस बार धारूहेड़ा में हालात पूरी तरह बदले हुए नजर आ रहे हैं।

रामनिवास और लांबा से अजय को खतरा

भाजपा के पूर्व मंडल अध्यक्ष रामनिवास और पूर्व प्रत्याशी रह चुके बाबूलाल लांबा सहित कई चेहरे दूसरी बार चुनाव मैदान में उतर चुके हैं। कांग्रेस प्रत्याशी राज भी पहले प्रत्याशी रह चुकी हैं। रामनिवास भाजपा के वोटों में सेंध लगाकर जहां अजय जांगड़ा को नुकसान पहुंचा सकते हैं, तो बाबूलाल लांबा 'असंतुष्टों' के वोटों पर नजर लगाए बैठे हैं। कंवर के लिए इस बार जीत की राह आसान नजर नहीं आ रही है, लेकिन अजय जांगड़ा को भी चेयरमैन की कुर्सी बातों में ही नहीं मिल जाएगी।

नप रेवाड़ी से पार्षद पद के लिए 179 प्रत्याशियों ने भरा पर्चा

27 तक नामांकन पत्रों की जांच व 28 तक वापस ले सकते हैं नामांकन : डीसी

नपा धारूहेड़ा से 86 उम्मीदवारों ने किया नामांकन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

जिले में 10 मई को होने वाले नगर परिषद रेवाड़ी व नगर पालिका धारूहेड़ा के आम चुनाव तथा पंचायती राज संस्थाओं में रिक्त पदों के उपचुनाव को लेकर नामांकन प्रक्रिया सम्पन्न हो गई। शनिवार को नामांकन के अंतिम दिन नगर परिषद रेवाड़ी के अध्यक्ष पद के लिए 2 और नगर पालिका धारूहेड़ा के अध्यक्ष पद के लिए एक उम्मीदवार ने नामांकन दाखिल किया। इनके अलावा नप रेवाड़ी के वार्डो के पार्षद पदों के लिए 56 और नपा धारूहेड़ा के वार्डो के पार्षद पदों के लिए 28 उम्मीदवारों ने पर्चा दाखिल किया। वहीं पंचायत राज संस्थाओं में रिक्त पदों के लिए 8 प्रत्याशियों ने नामांकन दर्ज कराया। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं डीसी अभिषेक मीणा ने बताया कि नामांकन पत्रों की जांच 27 अप्रैल को की जाएगी और उम्मीदवार 28 अप्रैल को दोपहर 3 बजे तक अपना नाम वापस ले सकते हैं, जिसके तुरंत बाद उम्मीदवारों को चुनाव चिंह आवंटित किए जाएंगे। 28 अप्रैल को ही प्रतियोगी उम्मीदवारों और पोलिंग स्टेशन की लिस्ट चस्पा की जाएगी। मतदान 10 मई को सुबह 8 बजे से शाम 6 बजे तक होगा। यदि आवश्यकता हुई तो 12 मई को पुनर्मतदान कराया जाएगा। परिणाम 13 मई को घोषित किए जाएंगे।

रेवाड़ी। नप रेवाड़ी पार्षद पद के लिए नामांकन पत्र देते हुए निर्दलीय प्रत्याशी।

अब तक के नामांकन करने वाले उम्मीदवार

शहरी निकाय चुनाव को लेकर 21 अप्रैल से शुरू हुई नामांकन प्रकिया के अंतिम दिन शनिवार तक नगर परिषद रेवाड़ी अध्यक्ष पद के लिए 7 और नगर पालिका धारूहेड़ा अध्यक्ष पद के लिए 12 उम्मीदवारों ने नामांकन जमा कराया है। वहीं नगर परिषद रेवाड़ी में वार्डों के पार्षद पदों के लिए 179 प्रत्याशियों ने नामांकन किया है। नगर पालिका धारूहेड़ा के वार्डों के पार्षद पदों के लिए 86 प्रत्याशियों ने पर्चा भरा हैं।

आईपीएल क्रिकेट मैच पर सट्टा लगाते दो आरोपी गिरफ्तार

रेवाड़ी। मॉडल टाउन थाना पुलिस ने बावल रोड स्थित एक निजी होटल में चेन्नई सुपर किंग्स व मुम्बई इंडियंस के बीच चल रहे आईपीएल मैच पर सट्टा लगाते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान गांव गोलियाका निवासी हरीश कुमार व दीपक कुमार के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से 1 लैपटॉप, 1 चार्जर व 2 मोबाइल फोन भी बरामद किए हैं। गत 24 अप्रैल की रात्रि पुलिस को सूचना मिली कि गांव गोलियाका निवासी हरीश कुमार अपने दोस्त दीपक के साथ बावल रोड स्थित एक निजी होटल के कमरे में कमीशन बेस पर सट्टा लगा रहा है। दोनों चेन्नई सुपर किंग्स बनाम मुंबई इंडियंस के बीच चल रहे आईपीएल मैच पर सट्टा लगा रहे हैं। सूचना पर पुलिस ने मौके से आरोपियों को काबू कर लिया। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से 1 लैपटॉप, 1 चार्जर व 2 मोबाइल फोन बरामद किया है। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ जुआ अधिनियम के तहत केस दर्ज किया है।

नशा व्यक्ति के शरीर, परिवार व समाज का सबसे बड़ा दुश्मन : एएसआई

- पुलिस टीम ने विद्यार्थियों को नशे से दूर रहने की दिलाई शपथ

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

पुलिस की नशा मुक्ति टीम ने शनिवार को गवर्नमेंट स्कूल बावल में विद्यार्थियों को नशे के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक किया गया। इस अवसर पर एएसआई जितेन्द्र ने कहा कि नशा व्यक्ति के शरीर, परिवार और समाज तीनों का सबसे बड़ा शत्रु है। यह न केवल स्वास्थ्य को बर्बाद करता है, बल्कि युवाओं का भविष्य भी अंधकारमय कर देता है। उन्होंने युवाओं से अभियान से जुड़ने का आह्वान किया व सभी को नशे से दूर रहने की शपथ दिलाई। नशा मुक्ति टीम ने विद्यार्थियों को साइबर अपराध के खतरों से भी अवगत कराया। उन्होंने बताया कि साइबर अपराधी फोन कॉल, सोशल मीडिया या अन्य माध्यमों से व्यक्तिगत जानकारी जैसे ओटीपी व पासवर्ड आदि हासिल करने की कोशिश करते हैं। ऐसे में सभी को सतर्क रहकर किसी भी अनजान व्यक्ति से अपनी निजी जानकारी साझा नहीं करनी चाहिए।

रेवाड़ी। विद्यार्थियों को नशे से दूर रहने की शपथ दिलाती पुलिस।

डिजिटल युग में स्व-गणना सशक्त माध्यम

- राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बीकानेर में जनगणना पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बीकानेर में जनगणना के प्रति विद्यार्थियों एवं आमजन को जागरूक करने के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य मनोज कुमार ने की। उन्होंने कहा कि देश की प्रगति की मजबूत नींव सटीक जनगणना पर टिकी होती है। उन्होंने बताया कि वर्तमान डिजिटल युग में स्व-गणना एक सशक्त माध्यम बनकर उभरी है, जो प्रत्येक नागरिक को अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने का अवसर प्रदान करती है। इस अवसर पर जनगणना विषय पर अंतर सदनीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रवक्ता पुनीता सैनी के नेतृत्व में आयोजित प्रतियोगिता में चार सदनों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता अत्यंत रोचक एवं प्रतिस्पर्धात्मक रही, जिसमें सभी टीमों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। विवेक हाउस ने शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रतियोगिता की ट्रॉफी पर कब्जा किया।

रेवाड़ी। प्रतियोगिता की विजेता टीम को पुरस्कृत करते शिक्षक।

ट्राफी दी

प्राचार्य ने विजेता टीम को बधाई देते हुए ट्रॉफी प्रदान की। अध्यापक मुकेश कुमार ने कहा कि जनगणना केवल आंकड़ों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह देश की नीतियों, योजनाओं एवं विकास की दिशा निर्धारित करने का आधार है। उन्होंने सभी से जनगणना एवं स्व-गणना में सक्रिय सहयोग करने की अपील की। कार्यक्रम में प्रवक्ता सोमबीर यादव, विक्टोरिया, नेहा शर्मा, मीनाक्षी चुग, कांता लहकरा, रेखा रोहिल्ला, अध्यापक रविंद्र कुमार

6 मई को रियासत-ए-रेवाड़ी शीर्षक पर फोटो व पेंटिंग प्रदर्शनी

- दक्षिण हरियाणा की संस्कृति को संरक्षित करने का करेगा कार्य

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

सिधरावली स्थित बीएमएल मुंजाल यूनिवर्सिटी में अहीरवाल क्षेत्र की समृद्ध ऐतिहासिक धरोहर को संरक्षित एवं प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अहीरवाल हेरिटेज फाउंडेशन के पदाधिकारियों एवं विश्वविद्यालय के अधिकारियों के बीच एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में अकादमिक सहयोग के माध्यम से हरियाणा के इतिहास, संस्कृति एवं अभिलेखागार के संरक्षण के लिए आपसी समन्वय पर चर्चा की गई। बैठक में इतिहास विभाग से प्रो. इदरीस कांत, डा. बिप्लव सिंह, डा. अनीश चक्रवर्ती तथा अहीरवाल हेरिटेज फाउंडेशन से सचिव मुकेश सुल्तानिया, डा. सुशांत यादव, मंगेश कुमार तथा दिनेश कुमार उपस्थित थे। इस अवसर पर संस्था की प्रधान प्रियंका यादव ने बताया कि अहीरवाल हेरिटेज फाउंडेशन, विश्वविद्यालय के साथ मिलकर दक्षिण हरियाणा की संस्कृति, विरासत एवं ऐतिहासिक धरोहरों को संरक्षित करने का कार्य करेगा। अभियान के तहत रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, गुरुग्राम एवं मेवात क्षेत्र के इतिहास और विरासत को सहेजने के लिए प्रयास किए जाएंगे।

फसल अवशेष जलाने की घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए टीमों का गठन

- गेहूं की फसल के अवशेष जलाने पर लगेगा जुर्माना और एफआईआर भी होगी दर्ज

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

डीसी अभिषेक मीणा ने कहा कि कृषि विभाग की ओर से सेटेलाईट के माध्यम से पराली जलाने वाले किसानों की निगरानी की जा रही है। पराली जलाने की घटना तुरंत विभाग के पास लोकेशन सहित पहुंच जाती है। उन्होंने किसानों से अपने खेतों में फसलों के अवशेष न जलाने का आह्वान किया है। उप निदेशक कृषि एंव किसान कल्याण विभाग डा. जितेन्द्र अहलावत ने बताया कि विभाग की ओर से किसानों को जागरूक करने और अवशेष जलाने की घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए जिला, ब्लॉक व गांव स्तर पर टीमों का गठन किया गया है, जिसमें ग्राम स्तर पर कृषि विभाग का एडीओ, पटवारी, ग्राम सचिव, सरपंच व पुलिस का प्रतिनिधी शामिल है। ब्लॉक स्तरीय टीमों में कृषि विभाग के खंड कृषि अधिकारी को नोडल अधिकारी बनाया गया है।

पराली को मिट्टी में मिलाने पर बढ़ती है उर्वरक शक्ति

सहायक कृषि अभियंता इंजी. दिनेश शर्मा ने कहा कि गेहूं की फसल के अवशेषों को मिट्टी में मिलाने से मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी व वातावरण को स्वच्छ रखने में सहायता मिलेगी। किसान अवशेषों को न जला सके, इसको लेकर कृषि विभाग ने निगरानी टीमों की नियुक्त की है। फसल अवशेष जलाने वाले किसान की मेरी फसल मेरा ब्यौरा पोर्टल पर रेड एंट्री दर्ज करने के साथ-साथ जुर्माना व एफआईआर दर्ज करने की कार्रवाई की जाएगी, जिससे किसान को भविष्य में सरकारी योजनाओं और सुविधाओं का लाभ भी नहीं मिल पाएगा।

पंचायती राज दिवस दर्शाता है ग्रामीण विकास की भूमिका

रेवाड़ी। कार्यक्रम में मौजूद अधिकारी व ग्रामीण। *फोटो : हरिभूमि*

- 24 अप्रैल 1993 को पंचायतों को मिला था संवैधानिक दर्जा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस के अवसर पर गांव लिसाना में ग्राम जल एवं सीवरेज समिति व ग्राम पंचायत की ओर से कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता गांव के सरपंच श्रीभगवान ने की। इस दौरान लोकतंत्र के सशक्तिकरण एवं जल प्रबंधन को लेकर ग्राम सभा का आयोजन किया गया। जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के जल एवं स्वच्छता सहायक संगठन की ओर से आयोजित कार्यक्रम में ग्रामीणों को स्वच्छता, पेयजल संरक्षण तथा सरकार की नई नीतियों के प्रति जागरूक किया गया। साथ ही ग्रामीणों को स्वच्छ-सुजल गांव की शपथ भी दिलाई गई। इस अवसर पर जिला सलाहकार योगेन्द्र परमार ने बताया कि 24 अप्रैल 1993 को 73वां संवैधानिक संशोधन लागू हुआ था, जिसके माध्यम से पंचायतों को संवैधानिक दर्जा मिला। इसी उपलक्ष्य में वर्ष 2010 से प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि यह दिवस ग्रामीण विकास, विकेंद्रीकरण तथा पंचायतों की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है।

ये रहे मौजूद

योगेन्द्र परमार ने ग्राम सभा में नई ओ एंड एम संचालन एवं रखरखाव नीति-के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस नीति के तहत ग्रामीण जल प्रबंधन में ग्राम जल एवं सीवरेज समितियों की भूमिका और अधिक मजबूत होगी। अब समुदाय सरकारी तंत्र के साथ मिलकर जल आपूर्ति व्यवस्था की देखरेख करेगा। उन्होंने भीषण गर्मी को देखते हुए ग्रामीणों से पेयजल को व्यर्थ न बहाने की अपील की। उन्होंने कहा कि अप्रैल से जून तक पानी की मांग बढ़ जाती है, इसलिए प्रत्येक नल पर टोंटी लगाना आवश्यक है। उन्होंने पेयजल का उपयोग सिंचाई या बागवानी में न करने की भी सलाह दी। इस अवसर पर बीआरसी मनोज कुमार, ग्राम सचिव प्रवीण कुमार, पंच राकेश कुमार, अशोक कुमार, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सुमन देवी, सुनीता देवी, रोहित, कमलेश, इंदिरा देवी, विकास कुमार, सुनील कुमार, चौकीदार मुकेश कुमार व पंप ऑपरेटर पृथ्वी सिंह सहित कर्मचारी मौजूद थे।

दिन का पारा पहुंचा 43.0 डिग्री सेल्सियस पर, गर्म हवाओं से जनजीवन पर असर

बादलों के बीच कई स्थानों पर बौछारें गिरीं, गर्मी के तेवर तल्ख नहीं पड़े ठंडे

दो-तीन दिन तक मौसम में बन रहेगा बदलाव

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

अप्रैल माह के अंतिम दिनों में गर्मी ने प्रचंड रूप धारण कर लिया है। पारा 43 डिग्री पर पहुंचने के कारण शाम तक गर्म हवाओं ने लोगों को जमकर परेशान किया। सामान्य जनजीवन पर गर्मी का व्यापक असर शुरू हो गया है। दोपहर बाद बादलों के बीच कुछ इलाकों में फुहारें भी गिरीं, परंतु इससे गर्मी का असर कम नहीं हुआ। रविवार से दो-तीन दिन तक मौसम इसी तरह का बना रह सकता है। इस दौरान कुछ इलाकों में बूंदाबांदी भी हो सकती है। तापमान में अभी गिरावट आने की संभावना नहीं है। शनिवार को सुबह के समय मौसम पूरी तरह साफ रहा। तेज धूप निकलने के कारण दोपहर भारी गर्मी ने लोगों का घरो से बाहर निकलना भी मुश्किल कर दिया। अधिकतम तापमान 0.5 डिग्री बढ़कर 43.0 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया। न्यनूतम तापमान इतनी ही गिरावट के साथ 24.5 डिग्री सेल्सियस पर आ गया। तापमान इस समय सामान्य से लगभग 5 डिग्री सेल्सियस ज्यादा बना हुआ है। दोपहर के समय लू का असर भी शुरू हो गया है। गर्मी का प्रकोप दो दिन से इस कदर बढ़ा है कि दोपहर के समय लोगों से घरों बाहर निकलना भी बंद कर दिया है। दोपहर बाद तक सड़कों और बाजारों में भीड़ गायब होने लगी है। सामान की खरीददारी के लोग सुबह-शाम के समय ही घरों से बाहर निकलते हैं। शनिवार को दोपहर बाद मौसम में बदलाव आना शुरू हो गया।

रेवाड़ी। शनिवार शाम आसमान में छाए बादल। *फोटो : हरिभूमि*

दो दिन तक बादल छाए रहने का अनुमान

मौसम विशेषज्ञ डा. चंद्रमोहन के अनुसार आने वाले दिनों में हरियाणा एनसीआर व दिल्ली में मौसम में बदलाव देखने को मिलेगा। शनिवार को एक नया कमजोर पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होने से बादलों की आवाजाही देखने को मिल रही है। इस मौसम प्रणाली का असर शनिवार शाम से रविवार रात्रि तक रहेगा। हरियाणा एनसीआर में तेज गति की हवाओं आंधी अंधड़ के साथ बिखराव वाली हल्की बारिश बूंदाबांदी की गतिविधियां देखने को मिलेगी। इस मौसम प्रणाली से हरियाणा एनसीआर दिल्ली में तापमान में ज्यादा गिरावट देखने को नहीं मिलेगी।

बिजली की खपत 10 लाख यूनिट तक बढ़ी

गर्मी का प्रकोप तेज होते ही बिजली की खपत भी बढ़नी शुरू हो गई है। लगभग 10 लाख यूनिट तक खपत बढ़ी है। इस समय कूलर, पंखे और एसी का इस्तेमाल बढ़ गया है, जिससे घरेलू बिजली का लोड बढ़ने लगा है। दैनिक खपत 80 लाख यूनिट के आसपास पहुंच चुकी है। मौसम ठंडा पड़ने तक इसमें और इजाफा होने की संभावना है। अभी तक बिजली की मांग और आपूर्ति में अंतर नहीं था, लेकिन गर्मी बढ़ने से अंतर भी बढ़ सकता है, जिससे आने वाले दिनों में पावर कटों का सामना करना पड़ सकता है।

52 जोड़ी रेल सेवाओं में विभिन्न श्रेणी के 132 डिब्बों की अस्थाई बढ़ोतरी की जा रही

ग्रीष्मकालीन अवकाश में यात्रियों को मिलेगी सुविधा, एक मई से जून तक बढ़ाए कोच

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

रेलवे की ओर से गर्मियों की छुट्टियों में अतिरिक्त यात्री यातायात को देखते हुए यात्रियों की सुविधा के लिए 52 जोड़ी रेलसेवाओं में विभिन्न श्रेणी के 132 डिब्बों की अस्थाई बढ़ोतरी की जा रही है। उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी अमित सुदर्शन ने बताया कि यात्रियों को एक मई से जून माह तक अतिरिक्त डिब्बों की सुविधा दी जा रही है।

रेवाड़ी। रेवाड़ी रेलमार्ग से गुजरती एक्सप्रेस ट्रेन। फोटो : हरिभूमि

दिल्ली-अजमेर जन शताब्दी में बढ़ाया कुर्सीयान कोच

गाड़ी संख्या 22471/22472 लालगढ-दिल्ली सराय-लालगढ रेलसेवा में लालगढ से एक मई से 31 मई तक तथा दिल्ली सराय से 3 मई से 2 जून तक 1 थर्ड एसी व 1 शयनयान श्रेणी डिब्बे की अस्थाई बढ़ोतरी की जा रही है। गाड़ी संख्या 20473/20474 दिल्ली सराय-उदयपुर सिटी-दिल्ली सराय रेलसेवा में दिल्ली सराय से एक से 31 मई तक तथा उदयपुर सिटी से 2 मई से एक जून तक 1 थर्ड एसी व 1 शयनयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 19611/19614 अजमेर-अमृतसर-अजमेर रेलसेवा में अजमेर से 2 मई से 30 मई तक तथा अमृतसर से 3 मई से 31 मई तक 1 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 19613/19612 अजमेर-अमृतसर-अजमेर रेलसेवा में अजमेर से 2 मई से 30 मई तक तथा अमृतसर से 3 मई से 31 मई तक 1 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 09621/09622 अजमेर-बान्द्रा टर्मिनस-अजमेर स्पेशल रेलसेवा में अजमेर से 3 मई से 31 मई तक एवं बान्द्रा टर्मिनस से 4 मई से एक जून तक 1 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 12065/12066 अजमेर-दिल्ली सराय रोहिल्ला-अजमेर जन शताब्दी रेलसेवा में एक मई से 30 मई तक 1 वातानुकुलित कुर्सीयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 14854/14853 जोधपुर-वाराणसी सिटी-जोधपुर रेलसेवा में जोधपुर से एक मई से 31 मई तक तथा वाराणसी सिटी से 2 मई से एक जून तक 1 थर्ड एसी श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 14864/14863 जोधपुर-वाराणसी सिटी-जोधपुर रेलसेवा में जोधपुर से 1 मई से 31 मई तक तथा वाराणसी सिटी से 2 मई से एक जून तक 1 थर्ड एसी श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 14866/14865 जोधपुर-वाराणसी सिटी-जोधपुर रेलसेवा में जोधपुर से एक मई से 31 मई तक तथा वाराणसी सिटी से 2 मई से एक जून तक 1 थर्ड एसी श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 04827/04828 भगत की कोठी जोधपुर-बान्द्रा टर्मिनस-भगत की कोठी जोधपुर साप्ताहिक स्पेशल रेलसेवा में भगत की कोठी से दिनांक 2 मई से 30 मई तक एवं बान्द्रा टर्मिनस से 3 मई से 31 मई तक 1 थर्ड एसी व 2 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे, गाडी संख्या 20485/20486 जोधपुर-साबरमती-जोधपुर रेलसेवा में जोधपुर से एक मई से 31 मई तक एवं साबरमती से 3 मई से 2 जून तक 1 थर्ड एसी व 2 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 20492/20491 साबरमती-जैसलमेर-साबरमती रेलसेवा में साबरमती से एक मई से 31 मई तक एवं जैसलमेर से 2 मई से एक जून तक 1 थर्ड एसी व 2 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 09653/09654 अजमेर-बान्द्रा टर्मिनस-अजमेर स्पेशल ट्रेन में अजमेर से 2 मई से 30 मई तक एवं बान्द्रा टर्मिनस से 3 मई से 31 मई तक 01 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 54754/54753 श्रीगंगानगर-बठिण्डा-श्रीगंगानगर एक्सप्रेस रेलसेवा में एक मई से 31 मई तक 4 साधारण श्रेणी डिब्बे तथा गाड़ी संख्या 54756/54755 श्रीगंगानगर-बठिण्डा-श्रीगंगानगर एक्सप्रेस रेलसेवा में एक मई से 31 मई तक 4 साधारण श्रेणी डिब्बों तथा गाड़ी संख्या 12985/12986 जयपुर-दिल्ली सराय-जयपुर डबल डेकर रेलसेवा में एक मई से 31 मई तक 1 एक्जिक्यूटिव वातानुकूलित कुर्सीयान श्रेणी डिब्बे की अस्थाई बढ़ोतरी की जा रही है।

इन ट्रेनों में बढ़ाए साधारण श्रेणी के डिब्बे

■ **28 जोड़ी रेलसेवाओं में बढ़ाए जाएंगे विभिन्न श्रेणी के 74 डिब्बे**

गाड़ी संख्या 19617/19618 मदार-रेवाड़ी-मदार रेलसेवा में एक मई से 31 मई तक तक 5 द्वितीय साधारण श्रेणी डिब्बों, गाड़ी संख्या 19620/19619 रेवाड़ी-फुलेरा-रेवाड़ी रेलसेवा में एक मई से 31 मई तक 5 द्वितीय साधारण श्रेणी डिब्बों, गाड़ी संख्या 59632/59631 रेवाड़ी-हिसार-रेवाड़ी रेलसेवा में एक मई से 31 मई तक 5 द्वितीय साधारण श्रेणी डिब्बों, गाड़ी संख्या 19622/19621 रेवाड़ी-फुलेरा-रेवाड़ी रेलसेवा में एक मई से 31 मई तक 5 द्वितीय साधारण श्रेणी डिब्बों, गाड़ी संख्या 59630/59629 फुलेरा-जयपुर-फुलेरा रेलसेवा में एक मई से 31 मई तक 5 द्वितीय साधारण श्रेणी डिब्बों, गाड़ी संख्या 09635/09636 जयपुर-रेवाड़ी-जयपुर रेलसेवा में एक मई से 31 मई तक 5 द्वितीय साधारण श्रेणी डिब्बों, गाड़ी संख्या 14705/14706 भिवानी-ढेहर का बालाजी-भिवानी रेलसेवा में 2 मई से एक जून तक 3 द्वितीय साधारण श्रेणी डिब्बों, गाड़ी संख्या 14725/14726 भिवानी-मथुरा-भिवानी रेलसेवा में भिवानी से 3 मई से 2 जून तक एवं मथुरा से 4 मई से 3 जून तक 3 द्वितीय साधारण श्रेणी डिब्बों, गाड़ी संख्या 14715/14716 हिसार-जयपुर-हिसार रेलसेवा में हिसार से एक मई से 31 मई तक एवं जयपुर से 4 मई से 3 जून तक 2 साधारण श्रेणी डिब्बों, गाड़ी संख्या 14734/14733 जयपुर-बठिंडा-जयपुर रेलसेवा में 2 मई से एक जून तक 2 साधारण श्रेणी डिब्बों, गाड़ी संख्या 54704/54703 जयपुर-बठिंडा-जयपुर रेलसेवा में जयपुर से 3 मई से 2 जून तक एवं बठिंडा से 4 मई से 3 जून तक 2 साधारण श्रेणी डिब्बों तथा गाड़ी संख्या 22491/22492 जोधपुर-दिल्ली-जोधपुर रेलसेवा में जोधपुर से एक मई से 15 मई तक एवं दिल्ली से 2 मई से 16 मई तक 1 थर्ड एसी व 1 थर्ड एसी इकोनोमी श्रेणी डिब्बे की अस्थाई बढ़ोतरी की जा रही है। 28 जोड़ी रेलसेवाओं में विभिन्न श्रेणी के 74 डिब्बे बढ़ाए जाएंगे।

खरखड़ा से दिन-दहाड़े लाखों की नकदी और गहने चोरी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ धारूहेड़ा

गांव खरखड़ा में चोर दिन-दहाड़े दीवार फांदकर ट्रांसपोर्टर के घर का ताला तोड़कर दो लाख कैश और करीब 6 लाख के गहने चुरा ले गए। चोरी की वारदात के समय परिवार गुरुग्राम गया हुआ था। जब वे दोपहर तीन बजे वापस लौटे तो घर के ताले टूटे मिले। धारूहेड़ा थाना पुलिस ने केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। गांव खरखड़ा निवासी अनूप यादव ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उसका परिवार गुरुग्राम गया हुआ था। 24 अप्रैल को वह भी घर पर ताला लगाकर गुरुग्राम चला गया। जब वे दोपहर 3 बजे वापस लौटे मेन गेट का ताला टूटा हुआ था। जांच करने पर कमरे में रखें संदूक का ताला टूटा और सामान बिखरा पड़ा था। अनूप ने बताया कि चोर पीछे की दीवार फांदकर उसके घर में घुसे। इसके बाद मेन गेट का दरवाजा तोड़ा और संदूक से दो लाख कैश, सोने की दो चेन, सोने का हार, दो अंगूठी, सोने का मंगलसूत्र और चांदी के चार जोड़ी पॉयजेब चुरा ले गए। पुलिस ने केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

चोरी की बकरियां खरीदने वाला मुख्य आरोपी गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

कुंड चौकी पुलिस ने 8 अप्रैल की रात को गांव पाली में हुई बकरी चोरी की वारदात को सुलझाते हुए चोरी की बकरियां खरीदने वाले मुख्य आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। गिरफ्तार किए गए आरोपी की पहचान जिला भिवानी के खाड़ी मोहल्ला निवासी विशाल के रूप में हुई है। पुलिस इस मामले में एक आरोपी को पहले ही गिरफ्तार चुकी है। गत 8 अप्रैल की रात को गांव पाली निवासी अनिल के बाड़े से चोरों ने धावा बोलकर 14 बकरियां और 6 मेमने चोरी कर लिए थे। अनिल ने बताया कि रात करीब 2 बजे गाड़ी की आवाज सुनकर जब वह बाहर आया, तो चोर उसे देखकर कार में फरार हो गए। पुलिस ने मामले में संलिप्त एक आरोपी जिला भिवानी के गांव पुर निवासी कर्ण उर्फ चाइनीज को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था।

रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्त में आरोपी विशाल।

पुलिस ने आरोपी के कब्जे से वारदात में इस्तेमाल की गई कार व बकरियां बेचकर मिली रकम में से 30 हजार रुपए नकदी बरामद की थी।

पूछताछ के दौरान आरोपी कर्ण उर्फ चाइनीज ने खुलासा किया कि उसने अपने भाई के साथ मिलकर बकरियां चोरी की थी और सभी बकरियां भिवानी के विशाल को बेच दी थीं। पुलिस ने शुक्रवार को विशाल को भी गिरफ्तार कर लिया। जांच में सामने आया है कि आरोपी विशाल एक आदतन अपराधी है जो चोरी की बकरियां खरीदने का सिंडिकेट चलाता है। उसके खिलाफ पहले भी जींद, भिवानी और राजस्थान के चूरू में कुल 10 मामले दर्ज हैं। वह अंतरराज्यीय स्तर पर चोरी का माल खपाने का काम करता है। पुलिस ने आरोपी विशाल को अदालत में पेश कर दो दिन के रिमांड पर लिया है।

नीट परीक्षा में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए ड्यूटी मजिस्ट्रेट नियुक्त किए

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

जिलाधीश अभिषेक मीणा ने एनटीए की ओर से जिले में 3 मई को आयोजित होने वाली नीट परीक्षा को शांति प्रिय ढंग से संपन्न कराने व कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 16 (1) व 17 (2) में निहित शक्तियों का प्रयोग करते हुए ड्यूटी मजिस्ट्रेट नियुक्त किए हैं। उन्होंने परीक्षा के लिए एसडीएम बावल संजीव कुमार को नोडल अधिकारी नियुक्त किया है। डीसी अभिषेक मीणा ने बताया कि नीट परीक्षा के लिए जिले में 11 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं, जिनमें 3788 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। उन्होंने कहा कि परीक्षा सुचारू रूप से सम्पन्न कराने के लिए ड्यूटी मजिस्ट्रेट नियुक्त किए गए हैं। उन्होंने कहा कि नीट परीक्षा के मद्देनजर कानून व्यवस्था देखना भी सभी डयूटी मजिस्ट्रेट की जिम्मेदारी रहेगी।

इन केंद्रों पर होगी नीट परीक्षा

जिले में आयोजित होने वाली नीट परीक्षा के लिए राजकीय बाल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रेवाड़ी, पीएमश्री रा. बालिका वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सरकुलर रोड रेवाड़ी, एफएलटीएमएसबीडी राजकीय महिला महाविद्यालय रेवाड़ी, पीएमश्री जवाहर नवोदय विद्यालय नैचाना, पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय रेवाड़ी, राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज लिसाना, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गुरावड़ा, पीएमश्री वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बिठवाना, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बूढ़पुर, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सहारनवास और राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गोकलगढ़ में परीक्षा केंद्र बनाए गए है।

अवैध शराब के साथ एक आरोपी गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

भाड़ावास गेट चौकी पुलिस ने अवैध शराब तस्करी के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार की गए आरोपी की पहचान मोहल्ला यादव नगर कालूवास रोड ककरवाली निवासी अक्षय के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से देशी शराब के 50 पव्वे बरामद किए है। पुलिस को सूचना मिली कि आरोपी अक्षय अवैध शराब बेचने का कारोबार करता है तथा प्लास्टिक कट्टे में शराब लेकर बस अड्डा रेवाड़ी से नाईवाली की ओर पैदल जाने वाला है। सूचना पर पुलिस ने अग्रसेन चौक पर नाकाबंदी करके आरोपी को काबू कर लिया। तलाशी लेने पर आरोपी के पास से 50 पव्वे अवैध देशी शराब बरामद हुई। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
रेवाड़ी कार्यालय : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, सेक्टर-1 वाला कच्चा रास्ता, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी सम्पर्क करें: 8053076211, 8295738500, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10×8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 1500/- रु. 2000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
रेवाड़ी : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी फोन : 9653537253, 9671434260

चुनाव मादक पदार्थ, अवैध शराब व हथियारों की तस्करी पर अंकुश लगाने के निर्देश

चुनाव में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए असला धारकों के शत-प्रतिशत हथियार जमा कराएं: एसपी

■ सभी क्राइम यूनिट और थाना प्रभारियों को विशेष गश्त और नाकाबंदी के निर्देश दिए

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

आगामी 10 मई को होने वाले शहरी निकाय आम चुनाव व पंचायती राज उपचुनाव को निष्पक्ष, शांतिपूर्ण और पारदर्शी तरीके से संपन्न कराने के लिए जिला पुलिस अलर्ट मोड़ पर है। शनिवार को एसपी हेमेंद्र कुमार मीणा ने लघु सचिवालय सभागार में जिले के सभी पर्यवेक्षण अधिकारियों, थाना प्रबंधकों और चौकी प्रभारियों के साथ बैठक की। इस मौके पर एसपी मीणा ने चुनाव प्रक्रिया को बाधित करने की कोशिश करने वाले शरारती तत्वों को सख्त चेतावनी दी और अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। एसपी ने कहा कि चुनाव के दौरान शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए लाइसेंसी असला धारकों के शत प्रतिशत हथियार जमा कराए तथा जो लोग अपने लाइसेंसी हथियार जमा नहीं कर रहे उनके खिलाफ कार्रवाई करें। उन्होंने कहा कि चुनाव में बाधा डालने वाले संभावित संदिग्धों को चिन्हित कर उनके खिलाफ विधि अनुरूप प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की जाए। एसपी ने मादक पदार्थ, अवैध शराब और हथियारों की तस्करी पर अंकुश लगाने के लिए सभी क्राइम यूनिट और थाना प्रभारियों को विशेष गश्त और नाकाबंदी के निर्देश दिए।

रेवाड़ी। पुलिस अधिकारियों की बैठक लेते एसपी हेमेंद्र मीणा। फोटो : हरिभूमि

पुलिसकर्मी को चुनाव आयोग के दिशा-निर्देशों व अपनी ड्यूटी की बारीकियों का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए

एसपी ने कहा कि सभी पुलिस अधिकारी अपने-अपने क्षेत्र के मतदान केंद्रों का दौरा करें। यदि किसी केंद्र पर बुनियादी सुविधाओं या सुरक्षा संबंधी कोई कमी पाई जाती है, तो संबंधित विभाग से पत्राचार कर उसे समय रहते दुरुस्त कराएं। एसपी ने कहा कि प्रत्येक पुलिसकर्मी को राज्य चुनाव आयोग के दिशा-निर्देशों और अपनी ड्यूटी की बारीकियों का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। ड्यूटी को लेकर किसी भी प्रकार का संशय न रखें और पूरी सजगता के साथ कार्य करें।

ये रहे मौजूद

बैठक में डीएसपी हेडक्वार्टर डा. रविन्द्र सिंह, डीएसपी बावल सुरेंद्र श्योराण, डीएसपी कोसली विद्यानंद, डीएसपी ट्रैफिक पवन कुमार, सभी थाना प्रबंधक, चौकी इंचार्ज, सुरक्षा शाखा इंचार्ज एएसआई सतपाल व रीडर एएसआई तेजपाल सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे।

खबर संक्षेप

स्वस्थ जीवन के लिए अधिक से अधिक पौधरोपण अत्यंत आवश्यक: डा. उर्मिला

रेवाड़ी। अहीर कॉलेज में शनिवार को इको क्लब इकाई की ओर से पर्यावरण संरक्षण की दिशा में पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्या डा. उर्मिला शर्मा ने पौधरोपण करके किया। इस अवसर पर प्राचार्या डा. शर्मा ने कहा कि स्वस्थ जीवन के लिए अधिकाधिक पौधे लगाना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने विद्यार्थियों से कम से कम एक पौधा लगाकर उसकी नियमित देखभाल करने का आग्रह किया। इको क्लब की संयोजिका डा. मीना कुमारी ने विद्यार्थियों को पेड़ों के महत्व से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि पेड़ हमारे जीवन का आधार हैं, क्योंकि वे हमें शुद्ध वायु, छाया तथा पर्यावरण संतुलन प्रदान करते हैं।

आजाद चौक शिव मंदिर से केदारनाथ पदयात्रा के लिए रवाना हुए श्रद्धालु

रेवाड़ी। श्री बाला जी धर्मार्थ समिति की ओर से संचालित आजाद चौक स्थित प्राचीन शिव मंदिर से शमशेर यादव को बाबा केदारनाथ धाम की पैदल निशान यात्रा के लिए रवाना हुए। मंदिर में विधि-विधान एवं मंत्रोच्चारण के साथ पूजा कराकर भक्त को रवाना किया गया। पंडित सुमन भारद्वाज ने पूजा-अर्चना कर यात्री को केसरिया ध्वज सौंपा और उनकी मंगलकामना की। पुजारी ने बताया कि शमशेर यादव पूर्व में श्री बालाजी धाम मेहंदीपुर, बाबा मोहन राम भिवाड़ी, हरिद्वार, ऋषिकेश तथा माता कांगड़ा देवी हिमाचल की पदयात्रा पूर्ण कर चुके हैं। शमशेर यात्रा के दौरान रेवाड़ी से पटौदी, गुरुग्राम, दिल्ली, मेरठ, हरिद्वार, ऋषिकेश, देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, गुप्तकाशी, सोनप्रयाग, गौरीकुंड, जंगलचट्टी व भीमबली लिनचौली होते हुए करीब 15 दिन में केदारनाथ धाम पहुंचेंगे। इस अवसर पर मंदिर प्रधान रामावतार, धर्मपाल यादव, राजकुमार सैनी, राजेंद्र सैनी, मास्टर बबरू भान सैनी, हार्दिक यादव, अनीता यादव व बाबूलाल वर्मा सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित थे।

पुस्तकों की समय पर उपलब्धता विद्यार्थियों की शैक्षणिक नींव को मजबूत करती : प्राचार्य

रेवाड़ी। राजकीय बाल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में शनिवार को नए शैक्षणिक सत्र के सुचारू संचालन के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाया गया। विद्यालय के प्राचार्य विनोद यादव के नेतृत्व में आठवीं कक्षा के सभी विद्यार्थियों को शिक्षा विभाग की ओर से प्राप्त नए पाठ्यक्रम की पुस्तकों के सेट वितरित किए गए। स्कूल बुक बैंक प्रभारी शिक्षाविद मनोज वशिष्ठ की देखरेख में मिडल विंग के विद्यार्थियों को पुस्तकें भेंट की गईं। इस अवसर पर विभिन्न कक्षों की प्रभारी सरोज धनखड़, रंजूबाला, ओमबाला, रीना यादव, सरोज बाला और राजेश यादव उपस्थिति रही। इस मौके पर प्राचार्य विनोद कुमार ने कहा कि पाठ्यपुस्तकों की समय पर उपलब्धता विद्यार्थियों की शैक्षणिक नींव को मजबूत करती है। स्कूल का प्रयास है कि सत्र के प्रारंभ में ही प्रत्येक छात्र के हाथ में ज्ञान का यह आधार हो, ताकि वे बिना किसी बाधा के अपनी पढ़ाई सुचारू रख सकें।

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में मोटीवेटर हाउस बना विजेता

रेवाड़ी। महेंद्रगढ़ रोड स्थित विकास इंटरनेशनल स्कूल में शनिवार को सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अंतर सदनीय सामान्य ज्ञान क्विज में कक्षा छठी से आठवीं तक के विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में मोटीवेटर हाउस ने प्रथम और बिलीवरस हाउस ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। शिक्षकों ने बच्चों का उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर स्कूल चेयरमैन देवेंद्र यादव ने कहा कि छात्रों के मार्गदर्शन के लिए समय-समय पर ऐसी प्रतियोगिताओं का आयोजन आवश्यक है। इससे छात्रों की विषय पर पकड़ मजबूत होती है। उन्होंने विजेता विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

पुलिसकर्मियों की सुख-सुविधाओं का ध्यान रखना विभाग की प्राथमिकता: एसपी हेमेंद्र

■ पुलिस अधीक्षक ने वेलफेयर मीटिंग में सुनी पुलिसकर्मियों की समस्याएं

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

पुलिसकर्मियों के कल्याण और उनकी कार्यक्षमता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शनिवार को लघु सचिवालय स्थित सभागार में डी लेवल वेलफेयर मीटिंग का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता एसपी हेमेंद्र कुमार मीणा ने की। इस मौके पर जिले के सभी थानों, चौकियों और पुलिस लाइन के जवानों व अधिकारियों ने अपनी व्यक्तिगत और विभागीय समस्याएं साझा की। एसपी ने कर्मचारियों की सभी समस्याओं को सुना तथा अधिकतर शिकायतों का मौके पर ही निपटारा किया तथा शेष मामलों के समाधान के लिए अधिकारियों को कार्रवाई करने के निर्देश दिए। एसपी मीणा ने कहा कि 24 घंटे ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों की सुख-सुविधाओं का ध्यान रखना विभाग की प्राथमिकता है। उन्होंने थानों और चौकियों में आवश्यक संसाधनों की कमी को जल्द से जल्द दूर करने का आश्वासन दिया। एसपी ने पिछली मीटिंग में रखी गई 7 समस्याओं के समाधान की समीक्षा भी की। इस अवसर पर डीएसपी हेडक्वार्टर डा. रविन्द्र सिंह, डीएसपी बावल सुरेंद्र श्योराण, डीएसपी कोसली विद्यानंद, डीएसपी ट्रैफिक पवन कुमार, वेलफेयर इंस्पेक्टर सीमा, पुलिस हाउसिंग कार्पोरेशन के एसडीओ संजय कुमार, डीएवी पुलिस पब्लिक स्कूल के प्रिंसिपल जॉय बनर्जी और आरडब्ल्यूए के सदस्य सहित सभी थाना प्रबंधक व चौकी इंचार्ज मौजूद थे।

रेवाड़ी। बैठक में पुलिस स्टाफ की समस्याएं सुनते एसपी मीणा। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 26 अप्रैल 2026

विशेषः अंतरराष्ट्रीय नृत्य दिवस 29 अप्रैल

आवरण कथा / प्रस्तुतिः रेणु खंतवाल

नृत्य ऐसी कला है, जो जीवन को उमंगित कर देती है। जिनके जीवन में नृत्य शामिल होता है, वे हर पल संतुलित, आनंदित महसूस करते हैं। नृत्य दिवस के अवसर पर यहां अलग-अलग शैली के नर्तक और नृत्यांगनाएं बता रहे हैं नृत्य का उनके जीवन में क्या महत्व है? यानी, नृत्य ने उनके जीवन को किस-किस स्तर पर बदला, उसे अलग दिशा प्रदान की? जब नृत्य के दौरान वे उसमें पूरी तरह खो जाते हैं तो उस समय किस तरह की अनुभूति होती है? और शारीरिक-मानसिक सेहत बेहतर करने में नृत्य की भूमिका को कितना महत्वपूर्ण मानते हैं?

जीवन की सरगम पर तन-मन की थिरकन

नृत्य से जीवन में निखार आता है

कविता द्विवेदी, ओडिसी नृत्यांगना

नृत्य मेरे लिए जीवन है और मेरे जीवन में नृत्य है। मैं ऐसा महसूस करती हूं कि अगर मेरे जीवन में नृत्य नहीं होता तो मेरे जीवन का कोई अस्तित्व भी नहीं होता। नृत्य ने समय-समय पर मेरे जीवन को बदला, स्थापित किया। मुझे अलग-अलग स्तर पर पहचान दी, आगे बढ़ाया। इसी की वजह से मुझे कॉलेज में स्कॉलरशिप मिली और देश दुनिया में अपनी कला दिखाने का अवसर मिला। मैं दृढ़ विश्वास से आगे बढ़ पाई। सन 2013 में मुझे ओडिसा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार मिला। इस पुरस्कार का भी मेरे जीवन में बहुत महत्व रहा है। नृत्य के माध्यम से मैंने खुद को खोजा, समझा कि मुझमें क्या अच्छाई है, क्या कमी? जब भी मैं नृत्य करती हूं, उसमें खो जाती हूं। उसके बाद मैं नृत्य के शिखर बिंदु पर पहुंच जाती हूं। वहां तो मुझे अपनी कोई सुधबुध नहीं रहती। पूर्ण समर्पण के साथ मैं नृत्य में डूबी होती हूं। उस दौरान एक दिव्य शक्ति को महसूस करती हूं। जब मैं अपनी प्रस्तुति पूरी करती हूं, उसके बाद मुझसे कुछ बोला ही नहीं जाता, मैं चुप हो जाती हूं। कभी महसूस करती हूं कि अब मुझे एकांत चाहिए। जिस शक्ति के साथ मैं नृत्य कर रही थी, उसी शक्ति के साथ मैं कुछ वक्त बिताऊं। नृत्य से मुझे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक ऊर्जा मिलती है। हर व्यक्ति को अपनी दिनचर्या में नृत्य को शामिल करना चाहिए। नृत्य से जीवन में निखार आता है। नृत्य के माध्यम से आप समाज में अलग पहचान, महत्व बनाते हैं। बहुत त्याग और तपस्या से मैंने नृत्य के माध्यम से देश-दुनिया में एक अलग पहचान बनाई है। *

तन-मन-जीवन के लिए जरूरी है नृत्य

श्रुति सिन्हा, कथक नृत्यांगना

नृत्य मेरे जीवन का महत्वपूर्ण, बहुआयामी हिस्सा है। नृत्य ने मुझे जीने का सकारात्मक नजरिया दिया। मेरा शरीर, मन और आत्मा पूरे तरीके से नृत्य में डूबे रहते हैं। मैं नृत्य के जरिए खुद को बहुत मजबूत महसूस करती हूं। जीवन में जितने भी उतार-चढ़ाव आते हैं, उनसे उबरने में नृत्य मेरी बहुत सहायता करता है। व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और पेशेवर स्तर पर नृत्य का मुझ पर बहुत प्रभाव रहा। आज नृत्य के कारण ही सामाजिक स्तर पर मुझे इतना मान-सम्मान मिलता है। नृत्यांगना, नृत्य शिक्षिका और कोरियोग्राफर के रूप में मेरी पहचान है। नृत्य ने ही मुझे सकारात्मक, ऊर्जावान बनाया। आत्म खोज व अनुशासन के साथ लक्ष्य की ओर बढ़ना सिखाया। रचनात्मक नई सोच और कल्पनाशक्ति प्रदान की। इस तरह नृत्य ने मुझे जीवन में बहुत कुछ दिया है। कई बार नृत्य करते हुए मैं जब उसमें पूरी तरह खो जाती हूं, उस समय जो अनुभूति होती है उसे शब्दों में बताना मुश्किल है। उस अनुभूति को सिर्फ महसूस किया जा सकता है। उस समय मैं सिर्फ अपने आप में लीन होकर नृत्य में डूबी होती हूं। शायद इसे ही नृत्य के जरिए मनुष्यत्व का देवत्व तक पहुंचना कहते हैं। नृत्य बहुत अच्छा व्यायाम भी है, जिससे शरीर लचीला, मजबूत और ऊर्जावान बनता है। नृत्य आत्मविश्वास बढ़ाता है, तनाव, चिंता व अवसाद कम करता है। नृत्य, संगीत और ताल के साथ जुड़कर मन को खुशी व शांति देता है। मन को संतुलित करने के साथ-साथ पूरे व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाता है। इस तरह नृत्य शारीरिक और मानसिक सेहत दोनों के लिए बहुत लाभकारी होता है। मेरा मानना है कि नृत्य को अपने डेली रूटीन में शामिल करने से सकारात्मक सोच बढ़ती है। आलस नहीं रहता। शरीर बीमारियों से दूर रहता है। अतः हम किसी भी उम्र के हों, नृत्य जरूर करना चाहिए। *

नृत्य मेरी अभिव्यक्ति का माध्यम है

बीके अतुल गोस्वामी, कंटेपरेरी डांसर-कोरियोग्राफर

मेरे लिए नृत्य केवल एक कला नहीं बल्कि मेरी पहचान है। नृत्य ने मेरे शरीर को शक्ति, मन को शांति और मेरी आत्मा को मुझसे जोड़ा है। जहां शब्द रुक जाते हैं, वहां से मेरा नृत्य शुरू होता है यानी नृत्य मेरी अभिव्यक्ति का माध्यम है। जब मैं नृत्य करता हूं और पीक पर पहुंच जाता हूं, उस समय मुझे यह महसूस होता है कि मैं डांस नहीं कर रहा हूं बल्कि मेरी आत्मा मेरे शरीर से डांस करवा रही है। उसके बाद हर बीट दिल की धड़कन बन जाती है और दुनिया कुछ पलों के लिए ठहर सी जाती है। डांस करते हुए मैं इस पीक को हमेशा महसूस करता हूं क्योंकि उन पलों में मैं खो जाता हूं। नृत्य केवल शरीर की ही नहीं बल्कि मन की थेरेपी भी होती है। नृत्य वो ताकत है, जो तनाव को भी ऊर्जा में बदल देता है। जैसे ही आप डांस करना शुरू करते हैं, शरीर में जितनी भी नकारात्मकता है, वह अपने आप रिलीज होने लगती है और आप बहुत हल्का महसूस करते हैं। अगर आप रूटीन में अपनी पसंद का कोई भी डांस शामिल करें तो यह आपको फ्रीडम का एहसास कराएगा। डांस के हर बीट पर आप अपने तनाव को कम करते जाते हैं। यह आपको शारीरिक रूप से तो फिट रखता ही है, साथ ही सोच व विचारों को सकारात्मक भी बनाता है। जब भी मैं तनाव महसूस करता हूं तो डांस करके खुद को हल्का और खुश महसूस करता हूं। इसलिए मैं तो यही सबसे कहता हूं कि हर इंसान को डांस जरूर करना चाहिए। *

नृत्य अध्यात्म से जोड़ता है और ईश्वर के करीब ले जाता है

ऐश्वर्य हरीश, भरतनाट्यम नृत्यांगना

मेरे लिए नृत्य केवल जीवन का हिस्सा नहीं है बल्कि मेरा जीवन ही है। मैं अपने परिवार की पांचवीं पीढ़ी से हूं, जो नृत्य कला से जुड़ी है। नृत्य मेरे खून में रचा-बसा है। बचपन से मैं देखती आ रही हूं कि यह मेरे साथ इस तरह जुड़ गया कि कभी लगा ही नहीं कि मैं कुछ अलग काम कर रही हूं। नृत्य ने मुझे अनुशासन और धैर्य सिखाया। खुद को समझना सिखाया। जैसे-जैसे मैं नृत्य करती गई यह मेरे लिए केवल नृत्य नहीं रहा बल्कि साधना बन गया। नृत्य हमें अपनी जड़ों से जोड़ता है। नृत्य अध्यात्म से जोड़ता है और ईश्वर के और करीब ले जाता है। कई बार लगता है कि जो मैं शब्दों में नहीं कह पाती, वह नृत्य अपने आप कह देता है। नृत्य में जो पीक स्टेज होती है, उसे शब्दों में कह पाना मुश्किल है। क्योंकि उस समय आप नृत्य कर नहीं रहे होते बल्कि नृत्य बन जाते हो। एक अलग ही स्थिति होती है, जहां अहंकार धीरे-धीरे मिट जाता है। उस समय न तो समय का, न दर्शकों का और न ही मंच का बोध रहता है। बस लय भाव और एक प्रवाह रह जाता है। कभी लगता है कि बाहर और भीतर का भेद ही मिट गया है और जो कुछ भी हो रहा है, वह अपने आप हो रहा है और आप उसका आनंद ले रहे होते हैं। अगर आप कृष्ण और यशोदा का संवाद दिखा रहे हैं तो आप ही कृष्ण, आप ही यशोदा हो जाते हैं। यह बहुत गहरा आनंद होता है। यह वह पल होता है, जहां कला साधना और अध्यात्म, तीनों एक हो जाते हैं। नृत्य शरीर का संतुलन अभ्यास भी है। इससे स्ट्रेंथ और स्टेमिना बढ़ता है। नृत्य की मुद्राएं शरीर में एक संतुलन उत्पन्न करती हैं और धीरे-धीरे यही संतुलन आपके जीवन जीने के तरीके और व्यवहार में भी आता है। जब आप नियमित रूप से नृत्य करते हैं तो एकाग्रता अपने आप बढ़ने लगती है। मन स्थिर हो जाता है। जीवन में तनाव भी कम होने लगता है। मेरा मानना है कि कला इंसान को सकारात्मक बनाती है। जब आप संगीत के साथ थोड़ी देर लय ताल में थिरकते हैं तो आपकी ऊर्जा अपने आप बदलने लगती है। *

मोबाइल स्क्रीन पर सिमटता सिनेमा
माइक्रो-सीरीज का चढ़ता सूरज!

न्यू ट्रेंड / **गौरव द्विवेदी**

फिल्म, टीवी सीरियल, वेब-सीरीज और शॉर्ट फिल्म्स के बाद अब माइक्रो-सीरीज का ट्रेंड तेजी से पॉपुलर हो रहा है। इसके पॉपुलर होने की क्या वजहें हैं। यह किस तरह से एंटरटेनमेंट स्टाइल को पूरी तरह बदल रहा है, इस पर एक नजर।

भारत में मनोरंजन की दुनिया एक दिलचस्प मोड़ पर है। सिनेमा अब बड़े पर्दे से निकलकर मोबाइल स्क्रीन में सिमट रहा है। इस बदलाव का सबसे बड़ा चेहरा है माइक्रो-सीरीज और वर्टिकल वीडियो। यह केवल एक ट्रेंड नहीं, बल्कि एक वैश्विक बदलाव है। अनुमान है कि 2025 तक दुनिया के कुल इंटरनेट ट्रैफिक का लगभग 82% वीडियो कंटेंट का रहा, जिसमें शॉर्ट, वर्टिकल वीडियो का दबदबा सबसे ज्यादा था।

बढ़ रहा शॉर्ट वीडियो मार्केटः इंस्टाग्राम और यू-ट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म्स ने देखने की आदत को पूरी तरह बदल दिया है। अब दर्शक 'देखता' नहीं, बल्कि 'स्क्रॉल' करता है, और हर स्क्रॉल में कहानी फिट होनी चाहिए। भारत में इस बदलाव की गति और भी तेज है। एक रिपोर्ट के अनुसार, देश में 100 मिलियन (10 करोड़) से अधिक दर्शक पहले ही माइक्रो-ड्रामा कंटेंट देख रहे हैं। यानी यह अब मनोरंजन की मुख्यधारा बन चुका है। वैश्विक स्तर पर शॉर्ट वीडियो मार्केट का आकार 2026 में लगभग 59 अरब डॉलर आंका जा रहा है, जो 2033 तक बढ़कर 118 अरब डॉलर से ज्यादा का हो सकता है। सिर्फ वर्टिकल वीडियो सेगमेंट ही 2025 में लगभग 67% हिस्सेदारी तक पहुंच चुका है, जो इस फॉर्मेट की ताकत को दर्शाता है।

घरेलू प्लेटफॉर्म्स की बड़ी भूमिकाः भारत में इस उभार के पीछे घरेलू प्लेटफॉर्म्स की बड़ी भूमिका है। 'कुकु टीवी' जैसे प्लेटफॉर्म ने वर्टिकल माइक्रो-ड्रामा को एक नई पहचान दी है। इसके 1.2 करोड़ (12.7 मिलियन) से अधिक डाउनलोड्स हो चुके हैं, जबकि इसके ऑडियो प्लेटफॉर्म 'कुकु एफएम' ने 1 करोड़ से अधिक पेड सब्सक्राइबर्स का आंकड़ा पार कर लिया है। इसी तरह 'मोज' और 'जोश' जैसे भारतीय शॉर्ट वीडियो प्लेटफॉर्म्स ने मिलकर 300 मिलियन (30 करोड़) से अधिक यूजर इकोसिस्टम तैयार कर लिया है। नई श्रेणी के प्लेटफॉर्म जैसे 'क्विक टीवी', 'टुकटुकी', 'कटिंग' भी 2–5 मिनट के एपिसोड्स के साथ तेजी से उभर रहे हैं, और कुछ रिपोर्ट्स के अनुसार हाल के महीनों में ही 150 मिलियन व्यूअर्स ने माइक्रो-सीरीज कंटेंट देखा, जबकि रोजाना एपिसोड व्यूज 100 मिलियन तक पहुंच गए।

अन्य देशों में भी बढ़ रही पॉपुलैरिटीः चीन इस बदलाव का सबसे बड़ा उदाहरण है, जहां 'डुआंजू' (माइक्रो ड्रामा) इंडस्ट्री तेजी से एक समानांतर फिल्म उद्योग बन चुकी है। वहीं अमेरिका में भी 'ड्रामा बॉक्स' जैसे प्लेटफॉर्म्स करोड़ों यूजर्स के साथ पारंपरिक ओटीटी को चुनौती दे रहे हैं। इतना ही नहीं, यू-ट्यूब शॉर्ट्स पर रोजाना दो सौ अरब व्यूज तक का आंकड़ा सामने आता है, जो इस बदलाव की गति को दर्शाता है।

तेजी से बढ़ रहा ट्रेंडः भारत में यह ट्रेंड और तेजी से बढ़ रहा है। सस्ते डेटा, 5जी और स्मार्टफोन के प्रसार ने इसे जन-आंदोलन बना दिया है। टियर-2 और टियर-3 शहरों में युवा दर्शक अब माइक्रो-सीरीज को न केवल देख रहे हैं, बल्कि बना भी रहे हैं। आर्थिक दृष्टि से भी यह मॉडल बेहद आकर्षक है। जहां एक

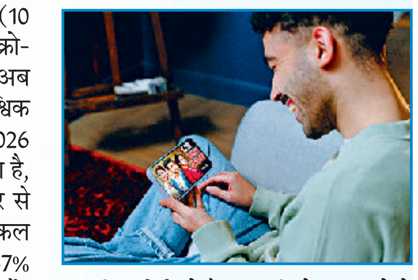

पारंपरिक टीवी शो के एक एपिसोड पर करोड़ों रुपए खर्च होते हैं, वहीं एक वर्टिकल सीरीज का पूरा सीजन कुछ लाख में बन सकता है। हालांकि, इस तेजी के साथ कुछ खतरे भी हैं। जैसे-कहानियों की गहराई कम हो रही है और एल्गोरिदम यह तय कर रहा है कि क्या चलेगा? फिर भी, यह मानना होगा कि यह बदलाव अस्थायी नहीं है। यह भारतीय मनोरंजन उद्योग के नए ढांचे की नींव है। आने वाले समय में बड़ी फिल्में और वेब-सीरीज पहले माइक्रो-फॉर्मेट में अपनी लोकप्रियता साबित करेंगी। अब सिनेमा देखा नहीं जाता, स्क्रॉल किया जाता है। और जो स्क्रॉल में फिट हो जाए, वही नया सिनेमा है। *

(लेखक फिल्म पॉलिसी के जानकार हैं)

गीत / **कृष्ण बिहारी**

सबकी अपनी सीमाएं हैं

कोई साथ कहां तक देगा
सबकी अपनी सीमाएं हैं,
हर कोई रीता-रीता है
कहने को सभी अघाए हैं।
अतृप्त जिंदगी छूंछी-सी
ऊपर से दिखती सजी-धजी
गर पास बुलाकर बैठा लो
तो लगती कितनी बुझी-बुझी
भ्रम के साए में सभी यहां
मुरदा पहचान बनाए हैं।
पेट काट जो तन ढंकती थी
वही भरे पेट अब नंगी है
नाच-नाचकर कहे सभ्यता
दुनिया यह रंग-बिरंगी है
रंग-रोगन से पुते हुए सब
भीतर-भीतर मुरझाए हैं।
जब देह में मन अनुपस्थित हो
औ' रूप जिए केवल पीड़ा
मेले में भी तनहाई हो
औ' प्राण हीन हो हर क्रीड़ा
तो बात समझनी क्या मुश्किल
अपनों से भेद छिपाए हैं।
कोई साथ कहां तक देगा
सबकी अपनी सीमाएं हैं।

व्यंग्य / **सूर्य कुमार पांडेय**

शातिर अंतरात्मा गब्बर की

गब्बर की अंतरात्मा ने झकझोरते हुए कहा, 'तू स्वभाव से डकैत है, डकैत ही रहेगा। इसलिए स्थान-परिवर्तन कर ले और अपने कर्म-परिवर्तन को यथावत बना रहने दे। चल, सम्मानित जिंदगी जीने की राह पकड़ ले!'

जब वही धंधा शहर में रह कर भी किया जा सकता है, तो बीहड़ में छिपकर क्यों रहा जाए?' एक रोज गब्बर की शातिर अंतरात्मा से आवाज आई, 'रे मूर्ख, परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। तू देखता ही होगा कि राजनेता आए दिन अपनी दलीय निष्ठाएं बदलते रहते हैं। बयानवीर अपने बयान बदल लेते हैं। सरकार में मंत्रियों के विभाग बदल जाते हैं। अधिकारियों और कर्मचारियों के तबादले होते रहते हैं। जिनका स्थानांतरण किया जाता है, वे जब दूसरी जगहों पर तैनाती पाते हैं तो क्या उनके गुण-धर्म बदल जाते हैं? भ्रष्टाचारी को कहीं भी भेज दो, वह भ्रष्टाचारी ही रहेगा। उसे सदाचारियों की भीड़ के बीच बैठा दो, तब भी वह स्वयं तो सुधरेगा नहीं, वहां के लोगों को अपने जैसा जरूर बना लेगा। यह काम तो तू भी कर सकता है। तू स्वभाव से डकैत है, डकैत ही रहेगा। इसलिए स्थान-परिवर्तन कर ले और अपने कर्म-परिवर्तन को यथावत बना रहने दे। चल, सम्मानित जिंदगी जीने की राह पकड़ ले!'

जब गब्बर की अंतरात्मा से यह आवाज बार-बार उठने लग गई, तब उसने एक शाम अपने गैंग के सदस्यों का एक पैनल बनाया और स्वयं एंकर की भूमिका में रहते हुए एक धुआंधार बहस की। एक बहसबाज दस्यु ने कहा, 'डकैती डालना घृणित कार्य है। अब हमें वैकल्पिक रोजगार की तलाश करनी चाहिए।' यह सुनकर दूसरे दुर्दांत बहसबाज ने घोर आपत्ति की, 'तुम बकवास कर रहे हो। डकैती तो हमारा पवित्र धर्म है। कोई हमारे धर्म को लेकर ऐसी बात कहेगा, तो मैं उसका सिर कलम कर दूंगा।' तीसरे बहसबाज डकैत ने कहा, 'अब डकैती के धंधे में पहले जैसी बरकत नहीं रही। मैं कल सरदार के आदेश पर एक गांव में गया था। वहां पर पहले हमारे जाते ही लोग अपने घरों से अनाज की बोरियां लाकर हमारे चरणों में धर दिया करते थे। इस बार मुझे पता चला कि सभी लोग खुद खाली थैले लेकर पांच किलो अनाज पाने के लिए सरकारी गल्ले की दुकानों पर गए हुए थे।' चौथे बहसबाज डाकू ने कहा, 'सरदार, अब आप ही बताइए, आपका निर्णय ही हमें दिशा दिखला सकता है।'

गब्बर ने बहस का समापन करते हुए कहा, 'मैंने तुम सबकी बातें ध्यानपूर्वक सुनी हैं और इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि हमें अपना यह डकैती वाला धंधा छोड़ देना चाहिए और दूसरे वैकल्पिक रास्ते तलाशने चाहिए। हम इस घटाटोप जंगल में अड्डे बदलते-बदलते आजिज आ चुके हैं। ऊपर से हमेशा पुलिस का डर बना रहता है। साथ में मुखबिरी के खतरे तो हैं ही। क्या पता, अपने ही गैंग का कौन बंदा कब दगा दे जाए और हम सब एक दिन किसी एनकाउंटर में मार दिए जाएं! क्यों कालिया?' तब कालिया कहने लगा, 'सरदार, मैंने आपका नमक खाया है। घोर महंगाई में आपने हमें नीबू भी खिलाए हैं। आपकी कृपा बनी रहेगी तो हम आपके फार्म हाउस में बैठकर कल पिज्जा-बर्गर भी खाएंगे। वैसे भी यह कोई हमारा पुश्तैनी धंधा तो है नहीं कि इसे छोड़ देने में डकैतों की बिरादरी में हमारी नाक कट जाएगी। हम बीहड़ की जगह शहर में रहकर भी वहां के सम्मानित डकैतों जैसी शानदार जिंदगी जी सकते हैं।' उन सभी की बातें सुनकर गब्बर ने खैनी मलते हुए पूछा, 'अरे ओ सांभा, तू क्यों चुप है? तू भी तो बता कि हमें क्या करना चाहिए?' सांभा बोला, 'सरदार, आपने जो फैसला लिया है, वही सही है।'

इसके बाद उस इलाके में अपने बर्बर आतंक के चलते कुख्यात हो चुका गब्बर अब एक शरीफ डकैत बन चुका है। यूं भी कुख्यात और विख्यात होने में कोई खास अंतर नहीं होता है। मात्र जंगल और नगर का फर्क होता है। तो गब्बर और उसका गैंग अब सम्मानित डकैत बन चुके हैं। अब उस पर सरकारें इनाम नहीं घोषित करतीं हैं। अब वह खुद सरकारों को मदद-इमदाद करता है। अब पुलिस भी उसे ठोकने की फिराक में नहीं रहती, अलबत्ता वह उसे ही सलाम ठोंकती है। लेकिन कल गब्बर के साथ एक बुरी बात हो गई। उसके घर पर सीबीआई और ईडी का छापा पड़ गया। उसकी हवेली पर बुलडोजर चल गया। गब्बर अपने पूरे गैंग के साथ जेल में है और अपनी शातिर अंतरात्मा को तलाश रहा है। वह मिल जाए तो उसे गोली मार देगा। लेकिन गब्बर यह बात नहीं जानता है कि उसकी अंतरात्मा तो डकैती के धंधे में आते ही मर चुकी थी। यह उसका आंतरिक भय था, जिसको वह गलती से अपनी शातिर अंतरात्मा समझ बैठा था। *

पुस्तक चर्चा / **कुलदीप सिंह भाटी**

ग्लैमर की दुनिया का किस्सा

कथा साहित्य में किस्सागोई का एक विशिष्ट स्थान रहा है। कारण इसका यह है कि किस्सागोई में बात से बात निकलती चली जाती है। इस तरह इसमें रोचकता के साथ ही साथ जिज्ञासा भी बनी रहती है। वरिष्ठ कथाकार और शायर हबीब कैफी का नया उपन्यास 'काला, धौला और रंगीन' इसी किस्सागोई शैली में लिखा गया एक उम्दा उपन्यास है। इस कथा की मुख्य पात्र पलक है। फिल्मी दुनिया की यह सफल अभिनेत्री, जब एक साहित्यकार के आगे खुलने लगती है तो प्रायः बंद ही रहने वाली यह स्त्री जिंदगी की कई परतें खोलती चली जाती है। पता चलता है कि एक नामी राजघराने से ताल्लुक रखने वाली यह अभिनेत्री अपने क्षेत्र, फिल्मी दुनिया के साथ ही साहित्य, कला और संगीत आदि से भी बड़ी हद तक लगाव और जुड़ाव रखती है। संवेदनशील अभिनेत्री पलक इस बीच सहज ही अपनी जिंदगी की परतें भी खोलती चली जाती है तो पता चलता है कि एक्स्ट्रा जूनियर आर्टिस्ट से नामी अभिनेता बने, समीर से यह गहरे प्रेम में है। मानवीय गुणों से संपन्न नैसर्गिक अभिनेता समीर मस्त मौला स्वभाव के कारण पलक के प्रेम का ठीक-ठीक जवाब नहीं दे पाता। समय अपनी गति से गुजरता जाता है और एक दिन अचानक ही समीर दुनिया छोड़ जाता है। उपन्यास के अंत में पाठक पलक की सच्ची और गहरी मोहब्बत महसूस करते हैं तो उनका दिल भी भर आता है।

लगभग अपठनीयता के इस दौर में यह उपन्यास न केवल स्वयं को पढ़वा ले जाता है, अपितु एक गहरी कसक भी पाठक के मन में छोड़ जाता है। उपन्यास के भाषा की रवानगी भी इसकी पठनीयता को बनाए रखने में बड़ी भूमिका निभाती है। *

पुस्तकः काला, धौला और रंगीन (उपन्यास), **लेखकः** हबीब कैफी, **मूल्यः** 299 रुपए, **प्रकाशकः** कौटिल्य बुक्स, दिल्ली

लघुकथा / **शीला श्रीवास्तव**

एहसास

सड़क पर दूर से ही पुलिस वालों की चेकिंग होती देख कमलेश ने अपनी मोटरसाइकिल वापस घुमा ली। 'क्या हुआ, गाड़ी क्यों वापस घुमा रहे हो?' पीछे बैठे दोस्त ने पूछा। 'आगे चेकिंग चल रही है। इन पुलिस वालों को कोई काम धंधा है नहीं। जब देखो चौराहे पर खड़े होकर चेकिंग करना शुरू कर देते हैं। हेलमेट क्यों नहीं पहना? लाइसेंस कहां है? बिना नंबर की गाड़ी कैसे चला रहे हो? ढेरों सवाल पूछने लगते हैं। उनको तो बस लोगों को तंग करना होता है और कुछ नहीं।' कमलेश झुंझलाते हुए बोला। 'ऐसा क्यों बोल रहे हो? वो तो बेचारे अपनी ड्यूटी करते हैं।' दोस्त ने कमलेश को समझाने की कोशिश की। 'अरे, काहे की ड्यूटी! इनको तो बस अपनी जेब भरनी होती है और कुछ नहीं।' कमलेश खीझ भरे स्वर में बोला।

इस घटना के कुछ दिनों बाद कमलेश के बेटे का एक्सीडेंट हो गया। बिना नंबर वाली गाड़ी चला रहे किसी टेंपो ड्राइवर ने पीछे से उनके बेटे की बाइक पर जोरदार टक्कर मार दी थी। हेलमेट न पहनने की वजह से उनके बेटे के सिर पर गंभीर चोट लग गई थी। 'ये पुलिस वाले आखिर करते क्या हैं? बिना लाइसेंस, नंबर वाले अवैध वाहनों के खिलाफ, चेकिंग करके उन पर नियंत्रण क्यों नहीं करते?' कमलेश की पत्नी बिलखते हुए अपने पति से पूछ रही थी। आज कमलेश को अपनी उस दिन की गलती का एहसास हुआ। अब उसे पुलिस वालों की चेकिंग का महत्व समझ में आ गया था। *

केरल के सबसे प्रसिद्ध धार्मिक-सांस्कृतिक उत्सवों में से एक है एथडुआ पेरुनल उत्सव। केरल के लोकजीवन से जुड़े इस पर्व के प्रति कुछ अन्य राज्यों एवं विदेशी पर्यटकों के बीच भी काफी लगाव है। इस उत्सव से जुड़ी कुछ अनोखी-रोचक बातें आप जरूर जानना चाहेंगे।

सांस्कृतिक उत्सव
धीरज बसाक

धर्म-संस्कृति-सामाजिक समरसता का संदेश देता एडथुआ पेरुनल उत्सव

केरल की सांस्कृतिक पहचान सिर्फ इसके मंदिरों और पारंपरिक उत्सवों तक सीमित नहीं है। यहां के ईसाई समुदाय के पर्व भी उतने ही भव्य और जीवंत हैं तथा लोकजीवन से जुड़े हुए हैं। इन्हीं में से एक एडथुआ पेरुनल उत्सव है, जो मुख्यतः सेंट जॉर्ज को समर्पित है। इसे केवल केरल के महत्वपूर्ण ईसाई धार्मिक आयोजनों में ही नहीं गिना जाता बल्कि यह दूसरे दक्षिणी राज्यों के ईसाई समुदायों के साथ-साथ दुनिया भर के सांस्कृतिक पर्यटकों के लिए भी महत्वपूर्ण आयोजन है। एडथुआ पेरुनल उत्सव हर साल अप्रैल के अंत से मई की शुरुआत तक लगभग 10 दिनों तक मनाया जाता है। इस साल यह 27 अप्रैल से 7 मई 2026 तक मनाया जाएगा।

हर दिन अलग-अलग आयोजन: इस उत्सव के दौरान चर्च परिसर और उसके आस-पास के पूरे क्षेत्र में एक विशाल मेले का आयोजन होता है। हजारों श्रद्धालु आस्था और श्रद्धा से इस उत्सव में भाग लेते हैं। बड़े पैमाने पर सांस्कृतिक पर्यटक भी इसका हिस्सा बनने के लिए देश-विदेश से आते हैं। उत्सव की शुरुआत विशेष प्रार्थनाओं और ध्वजारोहण से होती है। इसके बाद हर दिन अलग-अलग धार्मिक अनुष्ठान, जुलूस और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। अंतिम दिन का जुलूस या प्रोसेशन सबसे भव्य होता है, जिसमें सेंट जॉर्ज की प्रतिमा को सुसज्जित रथ पर निकालकर पूरे गांव में घुमाया जाता है। इस उत्सव के दौरान एक तरफ प्राचीन अनुष्ठान होते हैं, वहीं दूसरी ओर आधुनिक व्यवस्थाएं भी आयोजन का हिस्सा होती हैं।

आस्था एवं सामूहिक विश्वास का संगम: एडथुआ पेरुनल का धार्मिक महत्व भी खूब है, क्योंकि सेंट जॉर्ज के प्रति लोगों में बहुत श्रद्धा है। श्रद्धालुओं के मुताबिक इस उत्सव में भाग लेने से उनकी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। विशेषकर बीमारियों और मानसिक कष्टों से मुक्ति मिलती है। इस उत्सव में हिस्सा लेने आए लोग अपनी तरह-तरह की मन्नतें मांगते हैं और उनके पूरे होने पर सेंट जॉर्ज को धन्यवाद देने के लिए बार-बार इस उत्सव में शामिल होने का संकल्प लेते हैं। इसलिए यह पारंपरिक आयोजन व्यक्तिगत आस्था और सामूहिक विश्वास का भी संगम बन जाता है।

केरल की सांस्कृतिक विशिष्टता का दर्शन: एथडुआ पेरुनल, धार्मिक के साथ-साथ एक सांस्कृतिक उत्सव भी है, इसलिए यह केरल की सार्वभौमिक सह-अस्तित्व की भावना को दर्शाता है। इसमें दूसरे कई उत्सवों की तरह सजे-धजे हाथियों के साथ जुलूस निकाला जाता है, जो केरल के विशिष्ट उत्सवों की सबसे खास पहचान है। लोग पारंपरिक संगीत और लोकनृत्य का लुत्फ उठाते हैं। स्थानीय बैंड, चर्च संगीत और लोकनृत्य इस उत्सव को विशिष्टता प्रदान करते हैं। इस उत्सव के दौरान रात के समय भव्य आतिशबाजी के नजारे भी देखने को मिलते हैं, जो दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं।

आर्थिक दृष्टि से भी है महत्वपूर्ण: इस उत्सव का स्थानीय अर्थव्यवस्था के साथ भी एक बेहद गहरा और सकारात्मक रिश्ता है। उत्सव के दौरान अलग-अलग राज्यों एवं विदेशों से आए पर्यटक यहां की अर्थव्यवस्था में अपना योगदान देते हैं। अलग-अलग आजीविकाओं से जुड़े लोगों को उत्सव के दौरान रोजगार प्राप्त होता है या विशेष आय प्राप्त होती है।

विविधता में एकता का संदेश: एडथुआ पेरुनल उत्सव की एक अनोखी विशेषता इसकी सामाजिक समरसता है। यह उत्सव धार्मिक सीमाओं से परे जाकर लोगों को आपस में जोड़ता है, विभिन्न धर्मों और समुदायों के लोग मिलकर उत्सव मनाते हैं। ऐसे में यह एकता में विविधता का जीवंत उदाहरण बन जाता है। यह उत्सव इस बात को भी दर्शाता है कि बहुरंगी भारतीय संस्कृति में गहरा साझा भाव भी है। केरल जैसे राज्य में जहां साक्षरता और सामाजिक जागरुकता उच्च स्तर पर है, ऐसे आयोजन समाज को अधिक मजबूत बनाते हैं। आज के समय में जब समाज में विभाजन और तनाव की खबरें अकसर आती रहती हैं, एडथुआ पेरुनल जैसे उत्सव हमें सकारात्मक संदेश देते हैं। यह उत्सव सिखाता है कि धर्म और संस्कृति लोगों को जोड़ने का माध्यम हो सकते हैं, न कि उन्हें एक-दूसरे से अलग करने का।

कुल मिलाकर एडथुआ पेरुनल उत्सव सिर्फ धार्मिक भाव का पर्व नहीं है, यह आस्था, संस्कृति और सामाजिक एकता का जीवंत प्रतीक है। यह उत्सव केरल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है, जिसमें विभिन्न धर्मों और परंपराओं का सुंदर संगम देखने को मिलता है। एडथुआ पेरुनल उत्सव श्रद्धालुओं के लिए आस्था का केंद्र है, वहीं यह भारतीय संस्कृति की उस व्यापक सोच का भी प्रतिनिधित्व करता है, जो विविधता में एकता को सबसे बड़ा मूल्य मानती है। *

एडथुआ पेरुनल उत्सव की प्रमुख विशेषताएं

- यह अलप्पुझा (केरल) के एडथुआ गांव में मनाया जाता है और इसका मुख्य स्थल सेंट जॉर्ज फॉरेन चर्च है।
- यह हर साल 10 दिनों तक अप्रैल के अंत और मई की शुरुआत में मनाया जाता है।
- सेंट जॉर्ज को समर्पित इस सांस्कृतिक उत्सव की सबसे खास विशेषता है, इसका भव्य धार्मिक जुलूस। इस जुलूस में सजे-धजे हाथियों की परेड देखने को मिलती है, साथ ही इस दौरान पारंपरिक संगीत और नृत्य की छटा बिखरती है तथा आतिशबाजी का भी खूब रंग-बिरंगा उत्सव देखने को मिलता है।
- इसमें विभिन्न धर्मों की भागीदारी होती है, इसमें हिस्सा लेने वाले लोगों का एक बड़ा तबका ऐसे आस्थावान लोगों का होता है, जो अपनी असाध्य बीमारियों से मुक्ति पाने की इच्छा से यहां आते हैं और बीमारियों से मुक्ति पाने के लिए मन्नतें मांगते हैं।

मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान मेरे मरीजों की मुस्कान है

प्रेरक व्यक्तित्व
डॉ. पुरुषोत्तम लाल

पंजाब के मोगा जिले के एक छोटे से गांव से ताल्लुक रखने वाले डॉक्टर पुरुषोत्तम लाल का शुरुआती जीवन बहुत संघर्षपूर्ण रहा। लेकिन अपने अथक परिश्रम और समाज के लिए कुछ करने के संकल्प के चलते मेडिकल क्षेत्र में उन्होंने अद्वितीय मुकाम हासिल किया। डॉक्टर पुरुषोत्तम भारत में इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजी के फादर कहे जाते हैं। वह देश के दूसरे सबसे बड़े नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से विभूषित हैं। डॉ. पुरुषोत्तम लाल के प्रेरक जीवन का सफर उन्हीं की जुबानी।

आसान नहीं था आरंभिक जीवन: मेरा बचपन बहुत संघर्षपूर्ण था। हमारा पूरा ध्यान बस इस बात पर होता था कि घर कैसे चले और पढ़ाई कैसे पूरी हो? हम सभी भाई एक ही लैंप की हल्की रोशनी में पढ़ते थे, जिसकी चिमनी भी टूटी हुई होती थी। लेकिन मेरे अंदर कहीं एक आग जरूर थी, कुछ अलग करने की चाह। मन में यही ख्याल आता था कि जिंदगी में कुछ ऐसा करना है, जिससे अपने परिवार का जीवन बदल सकूं और समाज के लिए भी कुछ कर सकूं। उन्हीं कठिन परिस्थितियों में पले छोटे-छोटे सपने ही मेरी सबसे बड़ी ताकत बने और मुझे इस मुकाम तक लेकर आए।

परिश्रम से पाया मनचाहा मुकाम: मेरा पूरा सफर संघर्ष और मेहनत से भरा रहा है। अपनी लगन और समर्पण के दम पर मैंने नेशनल मेरिट स्कॉलरशिप हासिल की, जो मेरे लिए एक नई उम्मीद लेकर आई। इसी के सहारे मैं अमृतसर मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की पढ़ाई के लिए पहुंचा। वहां मैं दिन-रात मेहनत करता रहा और हर चुनौती को एक अवसर की तरह लिया। वर्ष 1975 में अपनी क्लास में टॉप किया। डॉक्टर बनने के बाद मैंने इसे केवल एक पेशा नहीं, बल्कि सेवा का माध्यम माना। इसके बाद आगे की पढ़ाई के लिए अमेरिका गया, जहां कार्डियोलॉजी में उच्च प्रशिक्षण लिया। वहां के प्रतिष्ठित संस्थानों में काम करते हुए मैंने बहुत कुछ सीखा, खुद को निखारा।

जन सेवा के लिए देश लौट आया: अमेरिका में मुझे बहुत कुछ मिला, बेहतर सुविधाएं, सम्मान और सीखने के अनगिनत अवसर। लेकिन दिल के किसी कोने में हमेशा एक खालीपन था। जब मैं भारत आता और यहां के मरीजों की हालत देखता, खासकर वे लोग जो पैसों की कमी के कारण इलाज नहीं करा पाते, तो मन बहुत व्यथित हो जाता था। मुझे लगता था कि मेरी असली जरूरत यहां है, अपने देश में है। इसलिए एक दिन मैंने तय किया कि अब वापस अपने देश लौटना है।

मेट्रो हॉस्पिटल्स की शुरुआत: मेरी सोच हमेशा से बहुत मानवीय रही है। तभी मैंने ठान लिया कि एक ऐसा अस्पताल बनाऊंगा, जहां इलाज की गुणवत्ता विश्वस्तरीय हो, लेकिन वह आम आदमी की पहुंच से बाहर न हो। मेट्रो हॉस्पिटल्स की शुरुआत इसी सोच और भावना के साथ हुई, सेवा, संवेदना और सुलभ इलाज के उद्देश्य से।

इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजी में योगदान: मैंने हमेशा कोशिश की कि मरीज को कम से कम तकलीफ हो और इलाज ज्यादा सुरक्षित और प्रभावी हो। अगर बिना बड़ी सर्जरी के किसी की जान बचाई जा सके, तो इससे बड़ी खुशी क्या हो सकती है। जब मैं देखता हूं कि जिन तकनीकों को हमने अपनाया और आगे बढ़ाया, वे आज हजारों लोगों की जिंदगी आसान बना रही हैं, तो दिल को सुकून मिलता है।

मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान: पद्म भूषण, पद्म विभूषण जैसे सम्मान मिलना निश्चित रूप से गर्व की बात है। लेकिन अगर दिल से कहूं, तो मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान मेरे मरीजों की मुस्कान है। जब कोई मरीज स्वस्थ होकर अपने परिवार के पास लौटता है और आंखों में खुशी के आंसू लेकर धन्यवाद देता है, तो वह किसी भी पुरस्कार से कहीं ज्यादा अनमोल होता है।

युवा डॉक्टरों को संदेश: मैं युवाओं से यही कहना चाहूंगा कि डॉक्टर बनना सिर्फ एक करियर नहीं, बल्कि एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। मरीज आपके पास उम्मीद और विश्वास लेकर आता है। इसलिए हमेशा सीखते रहें, खुद को अपडेट रखें और ईमानदारी से काम करें। सबसे जरूरी बात, अपने अंदर इंसानियत और संवेदनशीलता को जिंदा रखें। तकनीक और ज्ञान आपको एक अच्छा डॉक्टर बना सकते हैं, लेकिन आपकी संवेदना ही आपको महान डॉक्टर बनाती है।

सफलता के मायने: मेरे लिए सफलता का मतलब सिर्फ नाम, प्रसिद्धि या पुरस्कार नहीं है। असली सफलता तब होती है, जब आप किसी की जिंदगी में सकारात्मक बदलाव ला सकें। यही सच्ची सफलता है, जो दिल को संतोष देती है। *

प्रस्तुतिः हरिभूमि फीचर्स

दुनिया भर में प्रचलित अलग-अलग नृत्य कलाओं के महत्व को रेखांकित करने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 29 अप्रैल को अंतरराष्ट्रीय नृत्य दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर भारत की सांस्कृतिक विविधता को प्रदर्शित करते विभिन्न प्रदेशों के प्रमुख लोकनृत्यों के बारे में जानिए।

सांस्कृतिक विविधता के प्रतीक विभिन्न प्रदेशों के लोकनृत्य

महाराष्ट्र का लोकनृत्य-लावणी

असम का लोकनृत्य-बिहू

हिमाचल प्रदेश का लोकनृत्य-नाटी

परंपरा
शिखर चंद जैन

भारत विविधताओं का देश है। यहां की यह विविधता सिर्फ भाषा, खान-पान या रहन-सहन तक सीमित नहीं है, बल्कि यहां के लोक नृत्यों में भी रची-बसी है। लोक नृत्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि आम जनमानस के उल्लास, उनकी धार्मिक आस्था और ऋतुओं के चक्र का जीवंत उत्सव भी होते हैं।

बिहू (असम): असमिया नववर्ष (रंगाली बिहू) के अवसर पर किया जाने वाला यह नृत्य अपनी तेज गति और हाथों के संचालन के लिए प्रसिद्ध है। यह नृत्य हाथों के फुर्तीले संचालन और पारंपरिक 'मेखला चादर' वेशभूषा के लिए भी जाना जाता है। यह नृत्य नई फसल तैयार होने की खुशी और प्रकृति के प्रति आभार ज्ञापन करने का प्रतीक भी होता है।

नाटी (हिमाचल प्रदेश): हिमाचल का सबसे लोकप्रिय लोक नृत्य 'नाटी' कुल्लू और शिमला क्षेत्रों में बड़े उत्सवों के दौरान सामूहिक रूप से किया जाता है। सैकड़ों लोग एक-दूसरे का हाथ पकड़कर लंबी श्रृंखला बनाते हैं और स्थानीय वाद्ययंत्रों की धुन पर कदम से कदम मिलाकर झूमते हैं। इसने 'सबसे बड़े लोक नृत्य' के रूप में गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी अपना नाम दर्ज कराया है।

भांगड़ा (पंजाब): पंजाब की मिट्टी की खुशबू और किसानों के उल्लास का प्रतीक है भांगड़ा लोकनृत्य। मुख्य रूप से बैसाखी के पर्व और फसल कटाई के समय किया जाने वाला यह नृत्य अपनी ऊर्जा के लिए पूरी दुनिया में मशहूर है। ढोल की थाप पर रंगीन पगड़ी और लुंगी पहने गबरू जब 'बल्ले-बल्ले' कहते हुए थिरकते हैं, तो दर्शकों के पैर भी अपने आप थिरकने लगते हैं।

पंजाब का लोकनृत्य-भांगड़ा

रासलीला (उत्तर प्रदेश): ब्रज क्षेत्र का यह प्रसिद्ध नृत्य भगवान कृष्ण और राधा के प्रेम और उनकी लीलाओं पर आधारित है। ब्रज की धरती मथुरा-वृंदावन से उपजी 'रासलीला' भगवान श्री कृष्ण और गोपियों के दिव्य प्रेम की कहानी है। इसमें नर्तक अपनी भाव-भंगिमाओं से कृष्ण की बाल लीलाओं और रास को प्रदर्शित करते हैं, जो दर्शकों को सीधे भक्ति की दुनिया में ले जाता है।

घूमर (राजस्थान): राजपूताना आन-बान और शान का प्रतीक 'घूमर' को 'राजस्थान की आत्मा' कहा जाता है। अपनी शालीनता और भव्यता के लिए जाना जाने वाला यह नृत्य, भील जनजाति से आरंभ हुआ और बाद में राजपूताना घरानों की पहचान बना। इसमें महिलाएं बड़े घेरे वाले घाघरा पहनकर गोल-गोल घूमती हैं, जिससे एक सुंदर घेरा बनता है। इसकी धीमी लय और हाथ के सधे हुए संचालन इसे बेहद आकर्षक बनाते हैं।

लावणी (महाराष्ट्र): महाराष्ट्र की कला परंपरा का गौरव 'लावणी' पारंपरिक नृत्य है, जो अपनी लयबद्ध ताल और ढोलकी की थाप के साथ किया जाता है। इसमें महिलाएं नौवारी साड़ी पहनती हैं। नौवारी 9 गज की साड़ी होती है। इस नृत्य के दौरान गाए जाने वाले गीत अकसर समाज, राजनीति और प्रेम पर आधारित होते हैं।

कर्नाटक का लोकनृत्य-यक्षगान

यक्षगान (कर्नाटक): दक्षिण भारत का 'यक्षगान' एक प्राचीन और जटिल नृत्य कला है। यह केवल नृत्य नहीं, बल्कि एक संपूर्ण नाटक है, जिसमें भारी वेशभूषा, चेहरे पर चटकीला श्रृंगार और संवादों का प्रयोग होता है। इसकी कहानियां मुख्य रूप से हिंदू महाकाव्यों पर आधारित होती हैं, जो रात भर खुले मैदानों में प्रदर्शित की जाती हैं। *

यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल भारतीय नृत्य

भारत की कुछ लोकप्रिय नृत्य शैलियों को यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत में शामिल किया गया है। ये हैं-

गरबा (गुजरात): नवरात्रि के नौ दिनों में देवी दुर्गा की प्रतिमा या 'दीप गर्भ' के चारों ओर गोल घेरा बनाकर किया जाने वाला यह नृत्य शक्ति की उपासना का एक माध्यम एवं एकता का प्रतीक है। 'गरबा' के दौरान रंग-बिरंगी चनिया-चोली और कुर्तों में सजे लोग तालियों की लय पर जिस तरह समन्वय बिठाते हैं, वह अद्भुत होता है।

छऊ (झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल): यह एक अर्ध-शास्त्रीय मुखौटा नृत्य है, जिसमें मार्शल आर्ट, कलाबाजियां और लोक परंपराओं का मिश्रण होता है। इसमें रामायण और महाभारत जैसी पौराणिक कथाओं को नृत्य के माध्यम से जीवंत किया जाता है।

कालबेलिया (राजस्थान): राजस्थान के कालबेलिया समुदाय द्वारा किया जाने वाला यह नृत्य अपनी लचीली मुद्राओं के लिए जाना जाता है। काली रंग की कढ़ाई वाली पोशाक पहने महिलाएं बीन और ढफ की धुन पर नागिन की तरह लहराते हुए नृत्य करती हैं। इसकी गति इतनी तेज होती है कि देखने वाले अपनी पलकें झपकाना भूल जाते हैं।

बड़ा पर्दा
हेमंत पाल

दर्शकों को बांधे रखने में सफल रहीं
बिना इंटरवल वाली ये फिल्में

वैसे तो दो-ढाई घंटे की फिल्म के बीच में कुछ मिनटों का ब्रेक यानी इंटरवल जरूर होता है। लेकिन बॉलीवुड में कुछ ऐसी फिल्में भी बनी हैं, जिनमें कोई इंटरवल ही नहीं था। बिना ब्रेक वाली ऐसी ही कुछ अलग तरह की फिल्मों पर एक नजर।

हर दौर में कुछ फिल्मकार ऐसे हुए हैं, जो फिल्मों के तयशुदा फॉर्मूले को चुनौती देते हुए नए प्रयोग करते हैं। बिना गाने वाली फिल्में, सीमित किरदारों पर आधारित फिल्म या एक ही रात में घटित होने वाली घटना पर आधारित फिल्म। ऐसे प्रयोग सिनेमा को नई दिशा देते हैं। इन्हीं में से एक खास प्रयोग रहा बिना इंटरवल की फिल्म, जिसमें दर्शकों को बिना रुके पूरी कहानी के साथ बांधकर रखा जाता है। हालांकि फिल्म में इंटरवल इसलिए रखा जाता है कि दर्शक बीच में थोड़ा रिलैक्स हो जाएं और उसकी कहानी को नए सिरे से एंज्वॉय करें। इंटरवल के बहाने फिल्म की कहानी में मोड़ लाने का मौका भी मिलता है। ऐसे में बिना ब्रेक की फिल्म दर्शकों को नए तरीके का अनुभव देती है।

इसलिए किए गए प्रयोग: भारतीय सिनेमा में इंटरवल सिर्फ दर्शकों को रिलैक्स करने का साधन नहीं, बल्कि एक व्यावसायिक व्यवस्था का भी हिस्सा रहा है। लेकिन कुछ निर्देशकों ने महसूस किया कि खासतौर पर सस्पेंस, थ्रिलर और यथार्थवादी फिल्मों में इंटरवल कहानी की गति को तोड़ देता है। ऐसे में अगर फिल्म की लंबाई सीमित रखी जाए और पटकथा कसावट भरी हो, तो बिना ब्रेक दर्शकों को अधिक प्रभावशाली अनुभव दिया जा सकता है। यही कारण है कि हिंदी फिल्म इतिहास में कुछ चुनिंदा फिल्में ऐसी बनीं, जिनमें इंटरवल नहीं रखा गया। वे फिल्में अपनी अलग पहचान बनाने में सफल रहीं।

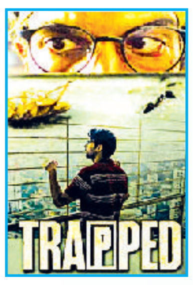

मर्डर मिस्ट्री 'इत्तेफाक': बिना इंटरवल के फिल्म बनाने की दिशा में सबसे चर्चित और शुरुआती प्रयोग 'इत्तेफाक' (1969) के रूप में सामने आया, जिसे यश चोपड़ा ने निर्देशित किया था। यह फिल्म अपने समय से काफी आगे की सोच का परिणाम थी। इस फिल्म में न तो कोई गीत था और न ही इंटरवल। कहानी एक मर्डर मिस्ट्री पर आधारित थी, जो अंग्रेजी नाटक 'साइनपोस्ट टू मर्डर' से प्रेरित थी। राजेश खन्ना ने इसमें एक ऐसे व्यक्ति की भूमिका निभाई, जिस पर अपनी पत्नी की हत्या का आरोप होता है और वह पुलिस से बचने के लिए एक घर में शरण लेता है। उस घर की मालकिन, जिसकी भूमिका नंदा ने निभाई, खुद एक रहस्य छुपाए हुए होती है। फिल्म की कहानी इतनी तेज और रोचक ढंग से आगे बढ़ती है कि दर्शकों को इंटरवल की जरूरत महसूस ही नहीं होती। लगभग डेढ़ घंटे की इस फिल्म को कम समय में शूट किया था, लेकिन इसकी कहानी की कसावट और रोमांच ने इसे यादगार बना दिया।

सामाजिक यथार्थ को दर्शाती 'धोबी घाट': फिल्म 'धोबी घाट' का निर्देशन किरण राव ने किया था। इस फिल्म में आमिर खान मुख्य भूमिका में नजर आए, लेकिन यह पूरी तरह से स्टार-ड्रिवन फिल्म नहीं थी। यह मुंबई शहर के अलग-अलग सामाजिक और भावनात्मक स्तरों पर जी रहे चार लोगों की कहानी है। मोनिका डोगरा, प्रतीक बब्बर और कृति मल्होत्रा द्वारा निभाए गए किरदारों के जरिए फिल्म यह दिखाती है कि सपनों के शहर में हर व्यक्ति अपने-अपने संघर्षों और अधूरी इच्छाओं के साथ जी रहा है। फिल्म का स्वर बहुत ही यथार्थवादी और संवेदनशील है। इसकी सीमित अवधि और बिना इंटरवल के प्रस्तुतीकरण की वजह से दर्शक लगातार पात्रों की दुनिया में डूबे रहते हैं।

क्लॉस्ट्रोफोबिक अनुभव देती 'ट्रैप्ड': विक्रमादित्य मोटवानी द्वारा निर्देशित 'ट्रैप्ड' में राजकुमार राव ने एक ऐसे युवक की भूमिका निभाई है, जो मुंबई के एक सुनसान अपार्टमेंट में फंस जाता है। उसके पास न खाना है, न पानी, न बिजली और न बाहर निकलने का कोई आसान रास्ता। पूरी फिल्म उसी के संघर्ष, भय और जीवित रहने की कोशिशों के इर्द-गिर्द घूमती है। बिना इंटरवल के यह कहानी दर्शकों को उसकी स्थिति में बांध देती है और एक तरह का क्लॉस्ट्रोफोबिक अनुभव देती है। 'ट्रैप्ड' में राजकुमार राव के अभिनय और फिल्म के प्रयोगात्मक स्वरूप की काफी सराहना हुई।

ये फिल्में भी नहीं करतीं ब्रेक की डिमांड: बॉलीवुड में कुछ और फिल्में भी हैं, जिनमें इंटरवल का प्रभाव लगभग समाप्त कर दिया गया या जिन्हें बिना ब्रेक के देखने पर ही इसका असर अधिक महसूस होता है। 'ए वेडनेसडे' जैसी फिल्म अपनी तेज रफ्तार और सीमित समय अवधि के कारण बिना इंटरवल के अधिक प्रभावी लगती है। इसी तरह 'कौन' जिसे राम गोपाल वर्मा ने बनाया, भी सीमित किरदारों और एक ही लोकेशन में घटित होने वाली कहानी के कारण बिना ब्रेक ज्यादा असरदार अनुभव देती है।

आज कितना प्रासंगिक है फिल्मों में इंटरवल: आज जब ओटीटी प्लेटफॉर्म का दौर है और दर्शक बिना किसी व्यवधान के फिल्में देखते हैं, तब इंटरवल की अवधारणा पहले जितनी अनिवार्य नहीं रह गई। अब कहानी की मांग के अनुसार ही फिल्म की संरचना तय की जाती है। फिर भी सिनेमाघरों में इंटरवल का चलन पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ। क्योंकि यह फिल्म प्रदर्शन की परंपरा और व्यवसाय से भी जुड़ा हुआ है। बिना इंटरवल की फिल्में यह साबित करती हैं कि अगर कहानी में दम हो और प्रस्तुति में कसावट हो, तो दर्शकों को बिना किसी ब्रेक के भी पूरी तरह बांधकर रखा जा सकता है। यह प्रयोग भले कम किया गया हो, लेकिन जब भी किया गया, उसने सिनेमा को एक नई दृष्टि दी और यह दिखाया कि कहानी कहने के तरीके हमेशा बदल सकते हैं। *